

आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार “बालकनामा” लिखकर प्रकाशित करने लगे।



आप भी बन सकते हैं बालकनामा अखबार का हिस्सा

- 1 लिखकर
- 2 खबरों की लीड देकर
- 3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-141 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | अगस्त 2026 | मूल्य - 5 रुपए

बाल प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण: पाँच दिवसीय आवासीय कार्यशाला में बच्चों ने सीखी नेतृत्व की नई राह

बालकनामा रिपोर्टर: प्रीति

क्या आपने कभी सोचा है कि सड़क एवं कामकाजी बच्चों की सुबह से लेकर रात तक की जिंदगी कैसी होती होगी? कई बच्चों की सुबह स्कूल जाने की तैयारी से शुरू होती है, जबकि कुछ बच्चों का दिन पानी भरने, साफ सफाई करने, घर के कामों में हाथ बँटाने या परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाने से शुरू होता है। कई बच्चों के सामने पानी, स्वच्छता और दूसरी बुनियादी सुविधाओं की कमी रहती है। कुछ बच्चों को छोटी उम्र में ही काम की जिम्मेदारी सنبालनी पड़ती है। ऐसे में पढ़ाई, खेल और आराम के लिए समय निकालना उनके लिए चुनौती बन जाता है। इन परिस्थितियों के बीच भी बच्चों के अपने सपने होते हैं। वे सीखना चाहते हैं, आगे बढ़ना चाहते हैं, अपनी पहचान बनाना चाहते हैं और अपने जैसे दूसरे बच्चों के लिए कुछ करना चाहते हैं। जरूरत इस बात की है कि उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने, अपनी बात रखने और नेतृत्व करने का अवसर मिले। इसी सोच के साथ चेतना संस्था सड़क एवं कामकाजी बच्चों के साथ उनके अधिकारों, शिक्षा और बेहतर भविष्य के लिए काम कर रही है। इसी पहल के तहत 21 से 25 जुलाई 2026 तक बोध शिक्षा समिति, कूकस, राजस्थान में पाँच दिवसीय आवासीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें दिल्ली, गुरुग्राम और नोएडा से कुल 38 बच्चों ने भाग लिया। इनमें 18 लड़के और 20 लड़कियाँ शामिल थीं। दिल्ली से स्ट्रीट टू स्किल्स परियोजना, गुरुग्राम से खिलती कलियाँ परियोजना और नोएडा से नन्हे परिंदे परियोजना के बच्चे कार्यशाला में शामिल हुए। बच्चों के साथ कार्यशाला के संचालन और प्रशिक्षण में 19 टीम सदस्यों ने सहभागिता की, जिनमें 4 पुरुष और 15 महिलाएँ थीं। अलग अलग शहरों और समुदायों से आए बच्चों ने पाँच दिनों तक एक साथ रहकर सीखा, खेला, चर्चा की, अपनी बातें साझा कीं और अपनी प्रतिभाओं को सामने रखा। शुरूआत में कुछ बच्चे समूह के

सामने बोलने में झिझक रहे थे। गतिविधियों और समूह अभ्यास के साथ उनका आत्मविश्वास बढ़ा और वे धीरे धीरे अपनी बात खुलकर रखने लगे। पाँच दिनों की यह कार्यशाला बच्चों के लिए एक ऐसा अनुभव बनी, जहाँ उन्हें अपने अनुभवों से सीखने, नए दोस्त बनाने और अपनी क्षमताओं को पहचानने का अवसर मिला। कार्यशाला का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चों को बाल प्रशिक्षक के रूप में तैयार करना था। बच्चों को बताया गया कि वे जो सीख रहे हैं, उसे अपने समुदाय के दूसरे बच्चों तक भी पहुँचा सकते हैं। इसके लिए उन्हें सरल भाषा में अपनी बात समझाने, समूह के सामने बोलने, सवाल पूछने, दूसरों की बात सुनने और गतिविधियों के माध्यम से सीखने का अभ्यास कराया गया। नेतृत्व, आत्मविश्वास, सामूहिक सहयोग, जिम्मेदारी और संवाद जैसे कौशल पर विशेष ध्यान दिया गया। पाँच दिनों तक सीखने की प्रक्रिया गतिविधियों से जुड़ी रही। खेल, समूह चर्चा, नाटक, संगीत, प्रश्नोत्तर, रचनात्मक गतिविधियों और प्रस्तुतियों के माध्यम से बच्चों को अपनी बात रखने का अवसर मिला। बच्चों ने पॉक्सो अधिनियम, बाल विवाह और बाल मजदूरी जैसे विषयों पर चर्चा की। इन विषयों को सरल भाषा और गतिविधियों के माध्यम से समझाया गया, ताकि बच्चे स्वयं इन्हें समझ सकें और अपने समुदाय के दूसरे बच्चों तक सही जानकारी पहुँचा सकें। बाल सुरक्षा और पॉक्सो अधिनियम पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। सत्र की शुरूआत लाल, पीले और हरे कार्ड वाली गतिविधि से हुई। बच्चों ने अपनी जानकारी के अनुसार कार्ड चुने। इससे प्रशिक्षकों को यह समझने में मदद मिली कि बच्चों को बाल सुरक्षा और पॉक्सो के बारे में पहले से कितनी जानकारी है। इसके बाद रिया की कहानी पर आधारित वीडियो दिखाया गया। वीडियो के माध्यम से सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श, अपनी सीमाओं को समझने और किसी असुरक्षित स्थिति में भरोसेमंद व्यक्ति से बात करने जैसे विषयों पर चर्चा हुई। वीडियो के बाद



बच्चों से सवाल पूछे गए और उन्होंने अपने विचार साझा किए। बच्चों को सवाल पूछने, सोचने और अपनी बात रखने का पूरा अवसर मिला। बाल विवाह पर हुए सत्र में बच्चों ने इस सामाजिक समस्या पर खुलकर चर्चा की। उन्होंने समझा कि कम उम्र में शादी होने से शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और भविष्य पर असर पड़ सकता है। बच्चों ने अपने आसपास देखी परिस्थितियों और अनुभवों को भी साझा किया। बातचीत के दौरान उन्हें समझाया गया कि यदि उनके आसपास किसी बच्चे की कम उम्र में शादी कराई जा रही हो, तो किसी भरोसेमंद व्यक्ति या उचित सहायता व्यवस्था तक जानकारी पहुँचाना जरूरी है। गीतों और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों ने संदेश दिया कि हर बच्चे को पढ़ने, खेलने, सीखने और अपने भविष्य के सपने देखने का अवसर मिलना चाहिए। बाल मजदूरी पर हुई चर्चा बच्चों के अपने जीवन और समुदाय से जुड़ी हुई थी। बच्चों से पूछा गया कि उन्होंने अपने आसपास किन जगहों पर बच्चों को काम करते देखा है और काम करने का उनकी पढ़ाई, खेल और रोजमर्रा की जिंदगी पर क्या असर पड़ता है। बच्चों ने बताया कि आर्थिक परेशानियों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कई बच्चों को कम उम्र में काम करना पड़ता है। चर्चा के माध्यम से बच्चों ने शिक्षा, सुरक्षा, खेल, आराम और विकास के अवसरों के महत्व को समझा। उन्होंने यह भी जाना कि वे अपने समुदाय में दूसरे

बच्चों को शिक्षा और बाल अधिकारों के बारे में जागरूक करने में भूमिका निभा सकते हैं। कार्यशाला में प्रशिक्षक प्रशिक्षण भी हुआ। बच्चों को समझाया गया कि अच्छे प्रशिक्षक जानकारी देने के साथ दूसरों की बात सुनता है, समूह के हर बच्चे को भाग लेने का अवसर देता है और कठिन विषयों को सरल तरीके से समझाता है। बच्चों ने सीखा कि किसी सत्र की शुरूआत कैसे की जाए, समूह का ध्यान कैसे आकर्षित किया जाए, सही सवाल कैसे पूछे जाएँ और गतिविधियों के माध्यम से विषय को कैसे समझाया जाए। इसके बाद बच्चों को छोटे समूहों में बाँटा गया और उन्हें स्वयं प्रशिक्षक बनने का अवसर दिया गया। बच्चों ने अपने साथियों के लिए गतिविधियाँ कराईं और अलग अलग विषयों पर अपनी बात रखी। साथियों ने उनकी प्रस्तुतियों पर प्रतिक्रिया दी। इस अभ्यास से बच्चों की झिझक कम हुई और बोलने का आत्मविश्वास बढ़ा। बच्चों ने महसूस किया कि वे सिर्फ सीखने वाले नहीं हैं, बल्कि दूसरों को भी सिखा सकते हैं। खेलों को भी सीखने का माध्यम बनाया गया। बच्चों ने मिलकर निर्णय लेना, एक दूसरे की मदद करना, जिम्मेदारी निभाना और समूह के साथ आगे बढ़ना सीखा। इन गतिविधियों से सामूहिक सहयोग, संवाद और नेतृत्व की भावना मजबूत हुई। शुरूआत में गतिविधियों में शामिल होने से झिझकने वाले बच्चे भी धीरे धीरे खुलकर भाग लेने लगे। संगीत और गीतों को जागरूकता के माध्यम के

रूप में भी इस्तेमाल किया गया। बच्चों ने बाल विवाह, बाल मजदूरी और बाल सुरक्षा जैसे विषयों पर गीत तैयार किए। उन्होंने समूह में शब्द लिखे, संदेश तय किए और अपनी प्रस्तुतियाँ तैयार कीं। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों ने समझा कि सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने के लिए गीत, नाटक, कविता और दूसरी रचनात्मक विधियों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। कार्यशाला के पाँचवें दिन बच्चों ने पाँच दिनों में सीखी बातों को प्रस्तुतियों के माध्यम से सामने रखा। सामूहिक नृत्य, गीत, प्रश्नोत्तर, वाद विवाद और अन्य रचनात्मक प्रस्तुतियों में बच्चों ने उत्साह के साथ भाग लिया। उनकी प्रस्तुतियों में आत्मविश्वास, सामूहिक सहयोग और सीखी गई बातों की समझ दिखाई दी। बच्चों को उनकी मेहनत और भागीदारी के लिए प्रमाण पत्र, पदक और साफा देकर सम्मानित किया गया। कार्यशाला की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में कुल 15 बच्चों का चयन बाल प्रशिक्षक के रूप में किया गया। इनमें 6 लड़के और 9 लड़कियाँ शामिल हैं। अब ये बच्चे अपने अपने समुदायों में दूसरे बच्चों के साथ बाल अधिकार, बाल सुरक्षा और अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूकता फैलाने में भूमिका निभाएँगे। इस जिम्मेदारी के साथ उन्हें अपने समुदाय के दूसरे बच्चों तक जानकारी पहुँचाने और उन्हें जागरूक करने का अवसर मिलेगा।

कार्यशाला में शामिल 14 वर्षीय आरिफ (परिवर्तित नाम) ने बताया, ‘पहले सबके सामने बोलने में झिझक होती थी, लेकिन जब मुझे छोटे समूहों में गतिविधियाँ कराने और अपनी बात रखने का अवसर मिला, तो मेरा आत्मविश्वास बढ़ा। अब मुझे लगता है कि मैं भी दूसरों के सामने अपनी बात आसानी से रख सकता हूँ।’

13 वर्षीय सना (परिवर्तित नाम) ने बताया, ‘बाल सुरक्षा के बारे में नई बातें सीखीं। पॉक्सो और बाल सुरक्षा के सत्र

शेष पृष्ठ 2 पर

दस्तावेज बनने से बच्चों को शिक्षा से जुड़ी योजनाओं का लाभ मिलने की उम्मीद

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: तरुण

जयपुर की कच्ची बस्ती प्रेम नगर में रहने वाले कई परिवारों के लिए हाल ही में राहत की खबर सामने आई है। लंबे समय से जाति प्रमाण पत्र नहीं होने के कारण बस्ती के बच्चों और उनके परिवारों को छात्रवृत्ति, स्कूल में जरूरी दस्तावेज जमा करने और कई सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में परेशानी होती थी। अब समुदाय के प्रयासों और

प्रशासन के सहयोग से कई परिवारों के जाति प्रमाण पत्र बन गए हैं। बालकनामा रिपोर्टर ने प्रेम नगर बस्ती का दौरा कर बच्चों और परिवारों से बातचीत की। 14 वर्षीय वरुण (परिवर्तित नाम) ने बताया, रपहले हमारे परिवार के पास जाति प्रमाण पत्र नहीं था। स्कूल में कई बार इसकी जरूरत पड़ती थी, लेकिन हमारे पास यह दस्तावेज नहीं था। अब हमारा जाति प्रमाण पत्र बन गया है। इससे छात्रवृत्ति के लिए आवेदन करना और स्कूल के दूसरे जरूरी काम पूरे करना

आसान हो जाएगा। बस्ती के लोगों ने बताया कि उन्होंने जरूरी दस्तावेज जुटाए और तहसील कार्यालय से संपर्क किया। इसके बाद कई परिवारों के जाति प्रमाण पत्र बन सके। लोगों का कहना है कि पहले जानकारी की कमी और दस्तावेज पूरे नहीं होने के कारण यह काम लंबे समय तक अटक रहा। बस्ती के परिवारों का मानना है कि जाति प्रमाण पत्र बनने से बच्चों को आगे की पढ़ाई से जुड़े काम पूरे करने में सुविधा मिलेगी। छात्रवृत्ति और अन्य सरकारी योजनाओं



के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया भी आसान होगी। जिन परिवारों के दस्तावेज अभी नहीं बने हैं, वे भी अब आवेदन की प्रक्रिया पूरी कर रहे हैं। प्रेम नगर के लोगों का कहना है कि समय पर सही जानकारी और प्रशासन का सहयोग मिलने से कई परिवारों की समस्या का समाधान हुआ है। उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही बस्ती के बाकी परिवारों के भी जरूरी दस्तावेज बन जाएंगे, जिससे अधिक बच्चों को पढ़ाई और सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सकेगा।



पढ़ाई के साथ परिवार का सहारा बनी किशोरी

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक
बातूनी रिपोर्टर: कान्हा

जयपुर की बगराना बस्ती में रहने वाली 12 वर्षीय राधिका (परिवर्तित नाम) छोटी उम्र में ही परिवार की जिम्मेदारियों को समझते हुए अपनी मां के साथ घर पर साड़ियों पर नग (स्टोन) लगाने का काम करती है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बावजूद वह अपनी पढ़ाई पूरी लगन और नियमितता के साथ जारी रखे हुए है। स्कूल जाने के साथ-साथ वह प्रतिदिन चेतना संस्था के एजुकेशन सेंटर भी आती है और पढ़ाई के लिए समय निकालती है। बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जब बस्ती का दौरा किया, तो राधिका अपने घर में मां के साथ साड़ियों पर नग लगाने का काम करती हुई मिली।

बातचीत के दौरान उसने बताया कि उसके पिता ई-रिक्शा चलाकर परिवार का पालन-पोषण करते हैं, लेकिन काम नियमित नहीं मिलने के कारण कई बार घर की आय कम हो जाती है। ऐसे समय में उसकी मां घर पर साड़ियों पर नग लगाने का काम करती हैं और राधिका भी उनका हाथ बंटती है। वह बड़ी सावधानी से एक-एक नग साड़ी पर लगाती है और रोज कुछ समय इस काम में देती है। राधिका ने बताया, रमैं नियमित रूप से स्कूल जाती हूं और हर दिन चेतना संस्था के

विश्व बालश्रम निषेध दिवस पर बच्चों ने निकाली जागरूकता रैली

बालकनामा रिपोर्टर - फारूख

विश्व बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर गुरुग्राम के वजीराबाद क्षेत्र में सड़क एवं कामकाजी बच्चों द्वारा एक जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली का उद्देश्य समाज को बाल श्रम के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करना तथा प्रत्येक बच्चे के शिक्षा के अधिकार के महत्व को समझाना था। रैली में बड़ी संख्या में बच्चों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और स्थानीय समुदाय के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों ने हाथों में तख्तियां और बैनर लेकर रबाल श्रम बंद करो, शिक्षा का अधिकार दोर, रबचपन पढ़ने के लिए है, काम करने के लिए नहींर और रहर बच्चे को मिले शिक्षा और सम्मानर जैसे प्रेरणादायक नारे लगाए। इन नारों के माध्यम से बच्चों ने समाज को यह संदेश दिया कि हर बच्चे को सुरक्षित और खुशहाल बचपन मिलना चाहिए।

रैली वजीराबाद की विभिन्न गलियों और सार्वजनिक स्थानों से होकर निकली। इस दौरान बच्चों ने स्थानीय लोगों से बातचीत कर उन्हें बालश्रम के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कम उम्र में मजदूरी करने से बच्चों की शिक्षा छूट जाती है, उनका शारीरिक और

एजुकेशन सेंटर में भी पढ़ने आती हूं। घर लौटने के बाद मां के साथ काम करती हूं। इस काम से मिलने वाले पैसों से घर के खर्च में मदद हो जाती है। कई बार मैं अपनी कॉपियां, स्कूल बैग, जूते और पढ़ाई की दूसरी जरूरी चीजें भी इन्हीं पैसों से खरीदती हूं, ताकि घर का खर्च थोड़ा कम हो सके। राधिका ने बताया कि काम की जिम्मेदारी के बावजूद उसने कभी पढ़ाई नहीं छोड़ी। वह रोज अपना होमवर्क पूरा करती है और परीक्षा की तैयारी भी करती है। उसका कहना है कि पढ़ाई उसके लिए बहुत जरूरी है और वह आगे भी अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती है।

जब बालकनामा रिपोर्टर ने उससे उसके सपने के बारे में पूछा, तो राधिका ने मुस्कुराते हुए कहा, ‘मैं बड़ी होकर टीचर बनना चाहती हूं। मैं उन बच्चों को पढ़ाना चाहती हूं, जिनके पास पढ़ने के साधन नहीं हैं।’ बगराना बस्ती के लोगों का कहना है कि आर्थिक कठिनाइयों के बीच कई बच्चे परिवार की जिम्मेदारियां निभाने के साथ अपनी पढ़ाई भी जारी रखे हुए हैं। राधिका भी उन्हीं बच्चों में से एक है, जो हर दिन काम और पढ़ाई के बीच संतुलन बनाकर अपने भविष्य के लिए मेहनत कर रही है। उसकी कहानी बताती है कि कठिन परिस्थितियों के बावजूद बच्चे अपने सपनों को छोड़ना नहीं चाहते और अवसर मिलने पर आगे बढ़ने का पूरा प्रयास करते हैं।

मानसिक विकास प्रभावित होता है तथा उनका भविष्य भी संकट में पड़ जाता है। बच्चों ने अभिभावकों और समुदाय के लोगों से अपील की कि वे किसी भी बच्चे से मजदूरी न करवाएं और सभी बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने में सहयोग करें। कार्यक्रम के दौरान बाल अधिकारों पर एक संवाद सत्र भी आयोजित किया गया। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बच्चों को उनके अधिकारों की जानकारी देते हुए बताया कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, संरक्षण और सम्मानपूर्ण जीवन का अधिकार प्राप्त है। उन्होंने कहा कि बालश्रम जैसी सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए केवल सरकार ही नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। रैली के समापन पर बच्चों ने संकल्प लिया कि वे अपने आसपास होने वाली बालश्रम की घटनाओं के प्रति सजग रहेंगे, लोगों को इसके खिलाफ जागरूक करेंगे तथा शिक्षा और बाल अधिकारों का संदेश अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे। इस जागरूकता रैली ने समुदाय में बाल श्रम के खिलाफ सकारात्मक संदेश फैलाने और बच्चों के अधिकारों के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तेज बारिश के जलभराव से झुग्गियों में घुसा पानी, बच्चों ने खुद संभाली जिम्मेदारी

बालकनामा रिपोर्टर- अंजलि

लगातार हुई तेज बारिश के बाद बालकनामा रिपोर्टर अंजलि ने समुदाय का दौरा किया। दौरे के दौरान उन्होंने देखा कि जलभराव के कारण कई झुग्गियों में बारिश का पानी भर गया था। कई छोटे-छोटे बच्चे अपने घरों में घुसे पानी को बाल्टियों, डिब्बों और बर्तनों की मदद से बाहर निकालते हुए दिखाई दिए। अधिकांश बच्चे अपने घर का सामान भी सुरक्षित जगह पर रखने की कोशिश कर रहे थे, ताकि वह भीगकर खराब न हो जाए। रिपोर्टर ने देखा कि समुदाय में वर्षा जल निकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण बारिश का पानी सीधे झुग्गियों के अंदर पहुंच जाता है। घटना के समय अधिकांश अभिभावक काम पर गए हुए थे। ऐसे में बच्चों को ही घरों से पानी निकालने और सामान को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी संभालनी पड़ रही थी। 13 वर्षीय रॉनी (परिवर्तित नाम) ने बताया, रबारिश होने पर हमारे घर में पानी भर जाता है। हम बाल्टी और डिब्बों से पानी बाहर निकालते हैं। कई बार घर का सामान भी भीग जाता है। रात में सोने की जगह भी नहीं बचती और खाना



बनाने में भी परेशानी होती है। समुदाय का दौरा करते समय रिपोर्टर ने यह भी देखा कि गलियों और रास्तों में कई जगह पानी भरा हुआ था। बच्चों ने बताया कि जल निकासी का कोई उचित रास्ता नहीं होने के कारण उन्हें इसी पानी से होकर

मंदिर के बाहर करतब दिखाकर परिवार का सहारा बन रहे कामकाजी बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक

बालकनामा रिपोर्टर दीपक जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा कर रहे थे। इसी दौरान उन्होंने दो बच्चों को सड़क किनारे करतब दिखाते हुए देखा। बच्चों से बातचीत करने पर उनकी जिंदगी से जुड़ी कई बातें सामने आईं। जयपुर के सिंधी कैंप क्षेत्र में रहने वाले एक भाई-बहन का बचपन आर्थिक कठिनाइयों के बीच गुजर रहा है। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण दोनों बच्चे हर मंगलवार और शनिवार को मेट्रो से चांदी की टकसाल स्थित काले हनुमान जी मंदिर के पास पहुंचते हैं। वहां वे सड़क किनारे करतब और छोटे-छोटे खेल दिखाकर लोगों से मिलने वाली सहायता से परिवार के खर्च में सहयोग करते हैं। 13 वर्षीय रोहित (परिवर्तित नाम) ने बताया, र्हम हर मंगलवार और शनिवार यहां आते हैं। जो लोग हमारी मदद करते हैं, उनसे मिलने वाले पैसों से घर का खर्च चलता है। बच्चों ने बताया कि उनके पिता दिव्यांग हैं और मां लंबे समय से बीमार हैं।



परिवार में आय का कोई नियमित साधन नहीं होने के कारण उन्हें भी छोटी उम्र में जिम्मेदारी उठानी पड़ रही है। करतब दिखाने के बाद जो भी पैसे मिलते हैं, उनसे घर की रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने की कोशिश की जाती है। बच्चों ने यह भी बताया कि वे पढ़ाई करना चाहते हैं, लेकिन घर की परिस्थितियों के कारण नियमित रूप से पढ़ाई जारी रखना आसान नहीं हो पाता। परिवार की जरूरतों को देखते हुए उन्हें कई बार

सड़क पर आकर करतब दिखाने पड़ते हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि ऐसे बच्चों तक शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और सरकारी योजनाओं का लाभ समय पर पहुंचना जरूरी है। उनका मानना है कि यदि इन परिवारों को नियमित सहयोग और आवश्यक सुविधाएं मिलें, तो बच्चों को सड़क पर काम करने की बजाय अपनी पढ़ाई और बचपन पर ध्यान देने का अवसर मिल सकता है।

बाल प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण: पाँच दिवसीय आवासीय कार्यशाला में बच्चों ने सीखी नेतृत्व की नई राह

पृष्ठ 1 का शेष

में मैंने सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श को समझना, अपनी सीमाओं को पहचानना और किसी परेशानी की स्थिति में किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करने का महत्व सीखा।’ 15 वर्षीय रिहान (परिवर्तित नाम) ने बताया, ‘बाल विवाह और बाल मजदूरी जैसे मुद्दों पर सोचने का मौका मिला। इस दौरान मैंने अपने आसपास की परिस्थितियों को एक नए नजरिए से देखने की कोशिश की और समझा कि कम उम्र में शादी या काम करने से बच्चों की पढ़ाई और बचपन प्रभावित हो सकता है।’

12 वर्षीय इमरान (परिवर्तित नाम) ने बताया, ‘खेल और गीतों से सीखना आसान लगा। गंभीर विषयों को जब

खेल, गीत और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से समझाया गया, तो उन्हें समझने और याद रखने में आसानी हुई।’

बालकनामा रिपोर्टर प्रीति ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि यह पाँच दिवसीय कार्यशाला बच्चों की क्षमता और आवाज को पहचानने की दिशा में महत्वपूर्ण अनुभव रही। अलग अलग समुदायों से आए बच्चों को एक साथ सीखने और अपनी बात रखने का अवसर मिला। बच्चों ने अपनी झिझक पर काम किया, नए कौशल सीखे और यह समझ विकसित की कि वे अपने समुदाय में दूसरे बच्चों के लिए भी भूमिका निभा सकते हैं। इन पाँच दिनों में बच्चों ने जाना कि अधिकारों की जानकारी होना जरूरी है

और उस जानकारी को दूसरों तक पहुंचाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने समझा कि नेतृत्व मंच पर खड़े होकर बोलने तक सीमित नहीं है। दूसरों की बात सुनना, साथियों को साथ लेकर चलना, जिम्मेदारी निभाना और जरूरत के समय किसी बच्चे के लिए आवाज उठाना भी नेतृत्व का हिस्सा है। कार्यशाला से लौटते समय 15 बच्चे बाल प्रशिक्षक की भूमिका के लिए तैयार थे। अब उनकी सीख उनके साथ तक सीमित नहीं रहेगी। वे अपने समुदायों में दूसरे बच्चों तक बाल अधिकार, बाल सुरक्षा और शिक्षा से जुड़ी जानकारी पहुंचाने की दिशा में काम करेंगे। इस तरह पाँच दिनों की यह सीख बच्चों के साथ उनके समुदायों तक आगे बढ़ेगी।

इंटरफेस बैठक के माध्यम से बच्चों ने पुलिस से बढ़ाई मित्रता

बालकनामा रिपोर्टर: अंजलि

चेतना संस्था द्वारा सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए बादशाहपुर पुलिस थाने में एक इंटरफेस बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का उद्देश्य बच्चों और पुलिस के बीच संवाद स्थापित करना, आपसी विश्वास बढ़ाना तथा बच्चों को उनके अधिकारों और सुरक्षा संबंधी जानकारी देना था। पुलिस थाने पहुंचने पर बच्चों ने पुलिस अधिकारियों एवं कर्मचारियों से मुलाकात की। बच्चों ने अपना परिचय दिया और चेतना संस्था से जुड़ने के बाद अपने अनुभव साझा किए।

केंद्र की बाल नेता प्रिय ने आत्मविश्वास के साथ अपने साथियों का परिचय कराया, जबकि बालकनामा रिपोर्टर अंजलि ने अपना तथा बालकनामा का परिचय देते हुए बच्चों द्वारा किए जा रहे कार्यों की जानकारी दी। पुलिस अधिकारियों ने बच्चों से पूछा कि उन्होंने चेतना संस्था से क्या-क्या सीखा है? बच्चों ने बताया कि संस्था ने उन्हें शिक्षा से जोड़ने, उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने तथा विद्यालय तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने यह भी साझा किया कि अब वे अपने अधिकारों को बेहतर ढंग



से समझते हैं और अन्य बच्चों को भी जागरूक करने का प्रयास करते हैं। बैठक के दौरान बच्चों के अधिकारों और बाल संरक्षण कानूनों पर भी चर्चा हुई। पुलिस अधिकारियों ने बच्चों से संबंधित कानूनों के बारे में प्रश्न पूछे। बच्चों ने पॉक्सो (ढडउरड) अधिनियम की जानकारी एक जागरूकता गीत के माध्यम से प्रस्तुत की और बताया कि इस गीत की रिकॉर्डिंग भी की जा चुकी है। बच्चों की प्रस्तुति से प्रभावित होकर पुलिस अधिकारियों ने तालियां बजाकर उनका उत्साहवर्धन किया और उनके आत्मविश्वास की सराहना की। पुलिस अधिकारियों ने बच्चों को चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 के बारे में जानकारी देते

हुए बताया कि किसी भी बच्चे के साथ हिंसा, शोषण, बालश्रम या किसी अन्य प्रकार की परेशानी होने पर इस हेल्पलाइन के माध्यम से तुरंत सहायता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि पुलिस बच्चों की सुरक्षा और सहायता के लिए हमेशा तत्पर है। बैठक के अंत में बच्चों और पुलिस अधिकारियों ने आपसी सहयोग और विश्वास बनाए रखने का संकल्प लिया। यह इंटरफेस बैठक बच्चों और पुलिस के बीच मित्रवत संबंध स्थापित करने तथा बच्चों में सुरक्षा और आत्मविश्वास की भावना को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल साबित हुई।

बाल सुरक्षा एवं पॉक्सो जागरूकता सत्र में बच्चों ने सीखे सुरक्षा के जरूरी पाठ

बालकनामा रिपोर्टर- प्रीति

दिल्ली के एन-86 समुदाय में चेतना संस्था और जिला बाल संरक्षण इकाई, नॉर्थ-वेस्ट के संयुक्त प्रयास से बाल सुरक्षा एवं पॉक्सो जागरूकता सत्र आयोजित किया गया। सत्र का उद्देश्य बच्चों को पॉक्सो अधिनियम, सुरक्षित स्पर्श और असुरक्षित स्पर्श, बाल सुरक्षा तथा चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 के बारे में जानकारी देना था। सत्र का संचालन जिला बाल संरक्षण इकाई की प्रोटेक्शन ऑफिसर मीनाक्षी शर्मा ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत परिचय सत्र से हुई। इसके बाद बच्चों से उनकी सुरक्षा, अधिकारों और रोजमर्रा के जीवन से जुड़े अनुभवों पर बातचीत की गई। बच्चों को बताया गया कि पॉक्सो अधिनियम 18 वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों को यौन शोषण, उत्पीड़न और अन्य लैंगिक अपराधों से सुरक्षा प्रदान करता है। साथ ही यह भी समझाया गया कि किसी भी प्रकार की अनुचित घटना होने पर कानून बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है और दोषी व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाती है। सत्र के दौरान बच्चों को सुरक्षित स्पर्श और असुरक्षित स्पर्श के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि सुरक्षित स्पर्श वह है जिससे बच्चा सुरक्षित और सहज महसूस करे, जबकि असुरक्षित स्पर्श वह है जिससे बच्चा असहज, भयभीत या परेशान महसूस करे। बच्चों को संवेदनशील तरीके से यह भी समझाया गया कि यदि कोई व्यक्ति अनुचित तरीके से छूने की कोशिश करे, गंदी तस्वीरें या वीडियो दिखाए या किसी भी तरह से असुरक्षित महसूस कराए, तो उन्हें चुप नहीं रहना चाहिए। बच्चों को रनो, गो और टेलर सुरक्षा नियम के बारे में भी बताया गया। उन्हें समझाया गया कि ऐसी स्थिति में सबसे पहले स्पष्ट रूप से रनाइ कहें, वहां से तुरंत चले जाएं और किसी भरोसेमंद बड़े व्यक्ति को पूरी घटना की जानकारी दें। सत्र में चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 की भूमिका पर भी चर्चा की गई।



बच्चों को बताया गया कि यह निःशुल्क सेवा चौबीसों घंटे उपलब्ध रहती है। यदि किसी बच्चे के साथ हिंसा, शोषण, बाल श्रम, बाल विवाह, तस्करी या किसी अन्य प्रकार की परेशानी हो, तो वह 1098 पर संपर्क कर सकता है। बच्चों को यह भी बताया गया कि हेल्पलाइन पर उनकी बात गोपनीय रखी जाती है और जरूरत के अनुसार सहायता उपलब्ध कराई जाती है। 13 वर्षीय नूर (परिवर्तित नाम) ने बताया, रमुझे पहले पॉक्सो कानून के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी। इस सत्र में पता चला कि किसी भी तरह की परेशानी होने पर 1098 पर मदद ली जा सकती है। हमें भरोसेमंद लोगों का एक घेरा बनाने के बारे में भी बताया गया, जिनसे जरूरत पड़ने पर मदद मांगी जा सकती है। 14 वर्षीय गौरी (परिवर्तित नाम) ने कहा, हमें उठठव टीम से पूछा कि वे किन मामलों में बच्चों की मदद करते हैं। मुझे पता चला कि बाल विवाह, बाल मजदूरी, हिंसा और शोषण जैसे मामलों में बच्चों को सहायता और सुरक्षा दी जाती है। अब मुझे अपने अधिकारों के बारे में पहले से ज्यादा जानकारी है। 12 वर्षीय मिथी (परिवर्तित नाम) ने बताया, रआज मुझे पहली बार अच्छी तरह समझ में आया कि सुरक्षित

और असुरक्षित स्पर्श क्या होता है। अगर कभी कोई मुझे असहज महसूस कराएगा, तो मैं चुप नहीं रहूंगी और अपने माता-पिता, शिक्षक या 1098 से मदद लूंगी। 13 वर्षीय अरबाज (परिवर्तित नाम) ने कहा, रआज के सत्र से मुझे समझ में आया कि अपनी सुरक्षा करना भी जरूरी है। अगर मेरे किसी दोस्त के साथ भी ऐसी कोई घटना होती है, तो मैं उसे किसी भरोसेमंद बड़े व्यक्ति और 1098 से मदद लेने के लिए कहूंगा। 14 वर्षीय प्रीति (परिवर्तित नाम) ने बताया, रमुझे पहले 1098 के बारे में बहुत कम जानकारी थी। अब पता चला कि यह बच्चों की मदद के लिए चौबीसों घंटे उपलब्ध सेवा है। मैं यह जानकारी अपने दोस्तों और परिवार के साथ भी साझा करूंगी। सत्र के दौरान बच्चों ने उत्साह के साथ सवाल पूछे और अपनी शंकाओं का समाधान किया। संवाद, उदाहरण और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को अपनी सुरक्षा, अपने अधिकारों और जरूरत पड़ने पर मदद लेने के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई। बच्चों ने कहा कि अब वे किसी भी असुरक्षित स्थिति में चुप रहने के बजाय भरोसेमंद लोगों से मदद लेने के लिए पहले से अधिक जागरूक और आत्मविश्वास महसूस करते हैं।

24वें बढ़ते कदम फाउंडेशन दिवस पर बच्चों ने निभाई नेतृत्व की भूमिका



बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: रिहाना

जयपुर में चेतना संस्था के चमकते सितारे प्रोजेक्ट के विभिन्न वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों पर 24वां बढ़ते कदम फाउंडेशन दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने गीत, नाटक, रचनात्मक गतिविधियों और विभिन्न प्रस्तुतियों के माध्यम से अपनी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया। बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर के विभिन्न चेतना वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों का दौरा कर बच्चों से उनके अनुभव जाने। बच्चों ने बताया कि बढ़ते कदम से जुड़ने के बाद उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है। अब वे अपने अधिकारों के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं और अपनी बात खुलकर रखने लगे हैं। कार्यक्रम में बच्चों ने रंग-बिरंगी वेशभूषा में भाग लिया और बाल अधिकार, समानता, पहचान तथा नेतृत्व जैसे विषयों पर अपने विचार साझा किए। बाल अधिकारों पर आधारित नाटक के माध्यम से उन्होंने शिक्षा, सुरक्षा, सहभागिता और पहचान के अधिकार का संदेश भी दिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण र्चैम्पियन ट्री (संकल्प वृक्ष) र गतिविधि रही। इस गतिविधि में बच्चों ने

स्वयं तय किया कि वे अपने समुदाय में किस तरह के चाइल्ड चैम्पियन बनना चाहते हैं। किसी ने शिक्षा चैम्पियन बनने का संकल्प लिया, तो किसी ने स्वच्छता, पर्यावरण, स्वास्थ्य, खेल, समानता और बाल अधिकारों के लिए काम करने की इच्छा व्यक्त की। बच्चों ने अपनी-अपनी संकल्प पतियां चैम्पियन ट्री पर लगाईं और उन्हें पूरा करने का संकल्प लिया। 12 वर्षीय हीना (परिवर्तित नाम) ने कहा, र्चैम्पियन ट्री गतिविधि से मुझे अपने भविष्य के बारे में सोचने का मौका मिला। मैं शिक्षा चैम्पियन बनकर दूसरे बच्चों को भी पढ़ाई के लिए प्रेरित करना चाहती हूं। 13 वर्षीय किशन (परिवर्तित नाम) ने बताया, रबढ़ते कदम से जुड़ने के बाद मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है। अब मैं अपनी बात खुलकर रखता हूं और स्कूल भी नियमित जाता हूं। र्चैम्पियन ट्री कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने मिलकर रबढ़ते कदम र का प्रेरणादायक गीत प्रस्तुत किया। बच्चों ने कहा कि वे अपने अधिकारों की जानकारी दूसरे बच्चों तक भी पहुंचाएंगे और अपने समुदाय में सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करेंगे। बच्चों का मानना है कि बढ़ते कदम से जुड़कर उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने, नए अनुभव सीखने और नेतृत्व की जिम्मेदारी निभाने का अवसर मिला है।

बारिश से बस्ती के बच्चों की बढ़ी मुश्किलें, घरों में घुसा पानी

बालकनामा रिपोर्टर - आसिफ

दिल्ली के कमला नेहरू कैंप में लगातार हो रही बारिश के कारण बस्ती के बच्चों और परिवारों की परेशानियां बढ़ गई हैं। कई घरों में बारिश का पानी घुस गया है, जिससे लोगों का सामान्य जीवन प्रभावित हुआ है। कई परिवारों का घरेलू सामान भी भीग गया है, जबकि बच्चों को लंबे समय तक घर के अंदर ही रहना पड़ रहा है। बालकनामा रिपोर्टर ने बस्ती का दौरा कर लोगों से बातचीत की। स्थानीय लोगों ने बताया कि बारिश के दौरान गलियों में पानी भर जाने से आने-जाने में काफी परेशानी होती है। कई जगह पानी इतना भर जाता है कि रास्ते बंद जैसे हो जाते हैं। बच्चों को स्कूल जाने और वापस घर लौटने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। फिसलन बढ़ जाने के कारण छोटे बच्चों को अकेले बाहर भेजने से भी परिवार डरते हैं। 14 वर्षीय अंजली (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'तेज बारिश होने पर हमारे घर में पानी भर जाता है। सबसे पहले हमें घर का पानी बाहर निकालना पड़ता है, उसके बाद ही दूसरे काम कर पाते हैं। कई बार हमारी किताबें, कॉपियां और दूसरा सामान भी भीग जाता है।' 13 वर्षीय समीर (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'बारिश के बाद गली में इतना पानी भर जाता है कि स्कूल जाना मुश्किल हो जाता है। कई बार रास्ता बंद होने पर हमें दूसरे रास्ते से जाना पड़ता है, जिससे स्कूल पहुंचने में ज्यादा समय लग



जाता है।' बस्ती के लोगों का कहना है कि जल निकासी की व्यवस्था ठीक नहीं होने के कारण लगभग हर बारिश में यही स्थिति बन जाती है। नालियों का पानी गलियों में भर जाता है और कई घरों तक पहुंच जाता है। इससे बच्चों, बुजुर्गों और काम पर जाने वाले लोगों को सबसे ज्यादा परेशानी होती है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यदि समय-समय पर नालियों की सफाई हो और पानी निकासी की बेहतर व्यवस्था की जाए, तो इस समस्या से काफी राहत मिल सकती है। बस्ती के परिवारों को उम्मीद है कि संबंधित विभाग इस ओर ध्यान देगा, ताकि बारिश के दौरान बच्चों और परिवारों को सुरक्षित माहौल मिल सके और उन्हें रोजमर्रा की परेशानियों का सामना न करना पड़े।

पढ़ाई की उम्र में कंधों पर कचरे की बोरी

बालकनामा रिपोर्टर: दीपक

जयपुर की लखेसरा बस्ती के दौरे के दौरान बालकनामा रिपोर्टर दीपक को एक ऐसी घटना सुनने को मिली, जिसने यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि सभी बच्चों का बचपन एक जैसा नहीं होता। जहां कुछ बच्चे स्कूल की घंटी सुनकर कक्षा की ओर दौड़ते हैं, वहीं कुछ बच्चे सुबह होते ही कचरे के ढेर की ओर निकल पड़ते हैं। बस्ती में रहने वाले 13 वर्षीय सलमान (परिवर्तित नाम) ने दो बच्चों की कहानी साझा की, जिनके परिवर्तित नाम मोहित और जीतू हैं। सलमान ने बताया कि दोनों बच्चे रोजाना बस्ती में कचरा बीनने आते हैं। उनके पास एक बड़ी बोरी होती है, जिसमें वे प्लास्टिक, कागज और अन्य कबाड़ इकट्ठा करते हैं। सलमान ने बताया कि एक दिन उसने उन बच्चों से बातचीत की। उसने पूछा, ‘तुम लोग रोज इतनी मेहनत क्यों करते हो?’ इस पर बच्चों ने बताया कि उनके घर की आर्थिक स्थिति बेहद कमजोर है। उनकी मां मजदूरी करती हैं, लेकिन उससे परिवार की जरूरतें पूरी नहीं हो पातीं। इसलिए दोनों भाई कचरा बीनकर परिवार की

मदद करते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि उनके पिता नशे की लत के कारण परिवार की जिम्मेदारियों से दूर रहते हैं। घर का खर्च चलाने के लिए मां और बच्चों को ही संघर्ष करना पड़ता है। कचरा बेचकर मिलने वाले पैसों से कभी राशन खरीदा जाता है, तो कभी घर की दूसरी जरूरतें पूरी की जाती हैं। सलमान ने कहा, रजब मैंने उनकी बातें सुनीं, तो मुझे बहुत दुख हुआ। वे भी हमारी तरह बच्चे हैं। उनके भी सपने होंगे, लेकिन परिस्थितियों ने उन्हें काम करने पर मजबूर कर दिया। यह घटना समाज के सामने एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा करती है। आखिर क्यों कुछ बच्चों को अपने बचपन की जगह जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ता है? क्यों कुछ बच्चे शिक्षा और खेल के अधिकार से वंचित रह जाते हैं? हर बच्चे का अधिकार है कि वह स्कूल जाए, सुरक्षित वातावरण में रहे और अपने सपनों को पूरा करने का अवसर पाए। जरूरत है कि ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें शिक्षा, संरक्षण और सरकारी योजनाओं से जोड़ा जाए, ताकि उनके हाथों में कचरे की बोरी नहीं, बल्कि किताबें हों और उनके सामने एक उज्ज्वल भविष्य हो।

अभिभावक बैठक में बच्चों की शिक्षा और अधिकारों पर हुई चर्चा

बालकनामा रिपोर्टर - जीत

गुरुग्राम के ईआरसी चक्करपुर केंद्र पर चेतना संस्था द्वारा अभिभावक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का उद्देश्य बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा, अधिकारों और उनके समग्र विकास से जुड़े विषयों पर अभिभावकों के साथ चर्चा करना था। बैठक में बड़ी संख्या में अभिभावकों ने भाग लिया और बच्चों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार भी साझा किए। बैठक की शुरुआत बच्चों की शिक्षा के महत्व पर चर्चा के साथ हुई। इसके बाद प्रत्येक बच्चे के प्रोग्रेस कार्ड की समीक्षा की गई। अभिभावकों को बच्चों की नियमित उपस्थिति, पढ़ाई में उनकी प्रगति और सीखने की स्थिति के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही उनसे कहा गया कि वे घर पर बच्चों की पढ़ाई के लिए समय निकालें और उन्हें नियमित रूप से स्कूल भेजने में सहयोग करें। बैठक में उन बच्चों के स्कूल प्रवेश पर भी चर्चा की गई, जिनका अभी तक नामांकन नहीं हो पाया है। चेतना संस्था की टीम ने अभिभावकों को प्रवेश प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेजों और सरकारी योजनाओं से जुड़ी जानकारी दी। टीम ने यह भी बताया कि जिन परिवारों



को प्रवेश प्रक्रिया में किसी प्रकार की कठिनाई होगी, उन्हें आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाएगा। बैठक के दौरान आधार कार्ड के महत्व पर भी विस्तार से चर्चा हुई। अभिभावकों को बताया गया कि स्कूल में प्रवेश, छात्रवृत्ति और विभिन्न सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए आधार कार्ड सहित अन्य जरूरी दस्तावेज समय पर बनवाना आवश्यक है। जिन बच्चों के आधार कार्ड नहीं बने हैं या उनमें सुधार की आवश्यकता है, उनके लिए आवश्यक जानकारी और मार्गदर्शन भी दिया गया। इस दौरान अभिभावकों ने बच्चों की पढ़ाई, दस्तावेजों और अन्य समस्याओं से जुड़े अपने अनुभव साझा

किए। संस्था की टीम ने उनकी बात सुनी और कई सवालों के जवाब भी दिए। बैठक में अभिभावकों से बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा और अधिकारों को प्राथमिकता देने तथा घर और समुदाय में बच्चों के लिए सकारात्मक माहौल बनाने पर भी चर्चा की गई। बैठक के अंत में कई अभिभावकों ने कहा कि ऐसी बैठकों से उन्हें बच्चों की पढ़ाई, जरूरी दस्तावेजों और सरकारी योजनाओं की जानकारी मिलती है। उनका मानना था कि इस तरह की चर्चा से बच्चों की शिक्षा को लेकर परिवार और संस्था के बीच बेहतर तालमेल बनता है, जिससे बच्चों को आगे बढ़ने में मदद मिलती है।



जिम्मेदारियों के बीच सना ने चुनी शिक्षा की राह

बालकनामा रिपोर्टर - अनुष्की बातूनी रिपोर्टर - अंशु

समुदाय भ्रमण के दौरान बालकनामा रिपोर्टर अनुष्की की मुलाकात 12 वर्षीय सना (बदला हुआ नाम) से हुई। उस समय सना तेज धूप में चूल्हे पर खाना बना रही थी। बातचीत के दौरान पता चला कि घर की जिम्मेदारियों के कारण वह अब तक स्कूल या किसी शिक्षा केंद्र से नहीं जुड़ पाई थी। उसने बताया कि उसके तीन छोटे भाई-बहन हैं। उसके माता-पिता रोज सुबह मजदूरी के लिए घर से निकल जाते हैं और देर शाम लौटते हैं। उनकी अनुपस्थिति में छोटे भाई-बहनों की देखभाल, उनके लिए खाना बनाना और घर के दूसरे कामों की जिम्मेदारी उसी पर होती है। उसने बताया, अगर मैं खाना नहीं बनाऊं, तो मेरे छोटे भाई-बहनों को पूरे दिन भूखा रहना पड़ सकता है। बातचीत के दौरान रिपोर्टर अनुष्की ने सना को चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र के बारे में जानकारी दी, जहां उसके जैसे कई बच्चे नियमित रूप से पढ़ने आते हैं। उन्होंने बताया कि यहां बच्चों को पढ़ाई के साथ जीवन कौशल और रचनात्मक गतिविधियों से भी जोड़ा जाता है। यह सुनकर सना ने भी पढ़ने की इच्छा जताई और शिक्षा केंद्र आने की बात कही। जब सना पहली बार शिक्षा केंद्र पहुंची, तो

उसने अपने जैसे कई बच्चों को पढ़ते, खेलते और अलग-अलग गतिविधियों में भाग लेते देखा। अन्य बच्चियों से बातचीत के दौरान उसे पता चला कि वे भी घर की जिम्मेदारियां निभाने के साथ नियमित रूप से केंद्र आती हैं। इससे उसका आत्मविश्वास बढ़ा और उसे लगा कि वह भी अपनी जिम्मेदारियों के साथ पढ़ाई जारी रख सकती है। इसके बाद चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं ने सना के माता-पिता से मुलाकात की। उन्होंने शिक्षा के महत्व और शिक्षा केंद्र की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बातचीत के बाद माता-पिता ने भी सना को नियमित रूप से शिक्षा केंद्र भेजने के लिए सहमति दे दी। आज सना नियमित रूप से शिक्षा केंद्र आ रही है। यहां वह अक्षरों की पहचान, पढ़ना-लिखना, प्रारंभिक गणित, जीवन कौशल और विभिन्न रचनात्मक गतिविधियां सीख रही है। पढ़ाई के प्रति उसकी रुचि बढ़ी है और वह केंद्र की गतिविधियों में उत्साह के साथ भाग लेती है। सना की कहानी बताती है कि कई बच्चे घर की जिम्मेदारियों के कारण पढ़ाई से दूर रह जाते हैं। समय पर सही जानकारी, परिवार का सहयोग और सीखने का अवसर मिलने से ऐसे बच्चों के लिए भी शिक्षा के रास्ते खुल सकते हैं और वे अपनी पढ़ाई की नई शुरुआत कर सकते हैं।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने उत्साह के साथ मनाया 24वाँ बढ़ते कदम फाउंडेशन दिवस



बालकनामा रिपोर्टर - फारूख

गुरुग्राम के वजीराबाद क्षेत्र में सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ 24वाँ बढ़ते कदम फाउंडेशन दिवस मनाया। इस अवसर पर बच्चों, समुदाय के सदस्यों और चेतना संस्था की टीम ने मिलकर विभिन्न सांस्कृतिक और रचनात्मक गतिविधियों में भाग लिया। कार्यक्रम बच्चों के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने, एक-दूसरे से सीखने और साथ मिलकर खुशी मनाने का अवसर बना। कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत गीत से

हुई। इसके बाद बच्चों ने गीत, नृत्य, कविता, नाटक और चित्रकला के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रस्तुत की। सभी बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ गतिविधियों में भाग लिया और एक-दूसरे का उत्साहवर्धन भी किया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों के साथ शिक्षा, बाल अधिकार, समान अवसर और आत्मविश्वास जैसे विषयों पर भी बातचीत की गई। बच्चों ने अपने विचार साझा किए और बताया कि शिक्षा उनके भविष्य के लिए कितनी महत्वपूर्ण है। कई बच्चों ने अपने अनुभव भी साझा किए और कहा कि उन्हें ऐसे कार्यक्रमों में भाग

पानी की होदी के पास फिसलने से मासूम घायल

बालकनामा रिपोर्टर - दिव्यांशी

बालकनामा रिपोर्टर दिव्यांशी ने एमार टावर समुदाय के कॉन्टेक्ट प्वाइंट क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान उन्हें जानकारी मिली कि 10 वर्षीय शिवा (परिवर्तित नाम) पानी की होदी के पास फिसलकर घायल हो गया। समुदाय के लोगों ने बताया कि शिवा नहाने के लिए पानी की होदी पर गया था। होदी के आसपास काफी कीचड़ और पानी जमा था, क्योंकि समुदाय के अधिकांश लोग वहीं नहाते हैं। पानी की निकासी की उचित व्यवस्था नहीं होने के कारण वहां अक्सर फिसलन बनी रहती है। नहाने के दौरान शिवा का पैर कीचड़ में फिसल गया और उसका मुंह होदी से



टकरा गया। इस हादसे में उसकी ठोड़ी पर गहरी चोट लगी और खून निकलने लगा। घटना के बाद आसपास मौजूद लोगों ने तुरंत बच्चे की मदद की, उसे सुरक्षित स्थान पर बैठाया और उपचार के लिए नजदीकी डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने प्राथमिक उपचार करते हुए घाव की सफाई की, दवा लगाई और पट्टी बांध

दी। समुदाय के लोगों का कहना है कि पानी की होदी के आसपास नियमित सफाई और पानी की निकासी की व्यवस्था नहीं होने के कारण यहां अक्सर कीचड़ और फिसलन बनी रहती है। उनका मानना है कि यदि समय पर सफाई हो और पानी की निकासी की उचित व्यवस्था की जाए, तो इस तरह की घटनाओं को काफी हद तक रोका जा सकता है। इस घटना ने एक बार फिर समुदाय में बच्चों की सुरक्षा से जुड़े सवाल खड़े किए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि संबंधित विभाग को पानी की होदी के आसपास सफाई, जल निकासी और सुरक्षित आवागमन की व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए, ताकि भविष्य में किसी अन्य बच्चे के साथ ऐसी दुर्घटना न हो।

आर्ट एंड क्राफ्ट गतिविधियों ने बच्चों की रचनात्मकता को दी नई उड़ान

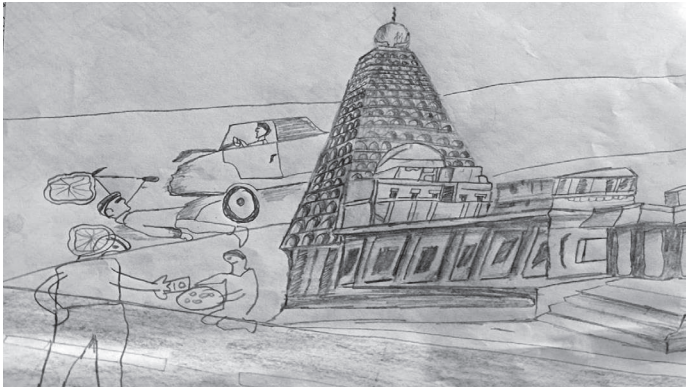


बालकनामा रिपोर्टर- अनुष्ठी बातूनी रिपोर्टर- मंजू

गुरुग्राम के खोटा कॉलोनी स्थित चेतना संस्था के शिक्षा केंद्र पर आयोजित आर्ट एंड क्राफ्ट गतिविधि में बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। इस दौरान बच्चों ने नई कलात्मक तकनीकों को सीखा और अपनी कल्पनाशक्ति को रंगों और कागज के माध्यम से अभिव्यक्त किया। गतिविधि बच्चों के लिए सीखने के साथ-साथ आनंद का भी अवसर बनी। गतिविधि के दौरान बच्चों ने पहली बार डॉट पेंटिंग

तकनीक का उपयोग करते हुए घर, फूल और कई अन्य आकर्षक चित्र बनाए। बच्चों ने बताया कि पहले वे सामान्य तरीके से चित्र बनाते थे, लेकिन डॉट पेंटिंग की नई तकनीक सीखना उनके लिए अलग अनुभव रहा। नई विधि से चित्र बनाते समय बच्चे काफी उत्साहित दिखाई दिए और हर कोई अपनी कलाकृति को सुंदर बनाने की कोशिश कर रहा था। इसके साथ ही बच्चों ने रंग-बिरंगे कागजों से गुलदस्ते, गुलाब के फूल और अन्य सजावटी वस्तुएं भी तैयार कीं। सभी बच्चों ने पूरे मन से अपनी कलाकृतियां बनाईं।

कागज से गुलाब तैयार करते समय बच्चे एक-दूसरे की मदद भी करते नजर आए और शिक्षक से नई-नई बातें सीखते रहे। 11 वर्षीय अश्विनी (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'पहली बार डॉट पेंटिंग की। मुझे बहुत अच्छा लगा। अब मैं घर जाकर भी ऐसे ही चित्र बनाऊंगी।' 10 वर्षीय रेहान (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'मुझे कागज से फूल बनाना सबसे अच्छा लगा। पहले मुझे यह नहीं आता था, लेकिन आज मैंने नया तरीका सीखा।' गतिविधि के अंत में बच्चों ने अपनी बनाई हुई कलाकृतियां अपने साथियों और शिक्षकों को दिखाईं। सभी बच्चे अपनी कला को लेकर काफी खुश नजर आए। शिक्षकों ने भी बच्चों के प्रयासों की सराहना की और उन्हें नई-नई रचनात्मक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। ऐसी गतिविधियां बच्चों को नई चीजें सीखने, धैर्य के साथ काम करने और अपनी कल्पनाशक्ति को अभिव्यक्त करने का अवसर देती हैं। बच्चों का कहना था कि वे आगे भी इस तरह की गतिविधियों में भाग लेना चाहते हैं और नई-नई कलाएं सीखना चाहते हैं।



भीख मांगने के दौरान सड़क हादसे में बालक हुआ गंभीर रूप से घायल

बालकनामा रिपोर्टर- तन्मय सिंह

बालकनामा रिपोर्टर तन्मय सिंह जब गुरुग्राम के ट्यूलिप चौक के पास किताब खरीदने जा रहे थे, तभी उन्होंने मंदिर और मॉल के बाहर कुछ बच्चों को भीख मांगते हुए देखा। इसी दौरान सड़क पार कर रहा एक बच्चा तेज रफ्तार वाहन की चपेट में आ गया। हादसा इतना गंभीर था कि बच्चे की चीख सुनकर आसपास मौजूद लोग तुरंत मौके पर पहुंच गए। घटना के बाद बालकनामा रिपोर्टर ने वहां मौजूद लोगों से बातचीत की। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस स्थान पर कई बच्चे रोज सड़क किनारे भीख मांगते हैं। मंदिर और मॉल के आसपास लोगों की आवाजाही अधिक रहती है, इसलिए कई लोग बच्चों को खाने-पीने का सामान या कुछ पैसे दे देते हैं। इसी दौरान तेज रफ्तार से आए एक वाहन ने सड़क पार कर रहे बच्चे को टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि

हादसे के तुरंत बाद आसपास मौजूद लोगों ने घायल बच्चे को नजदीकी अस्पताल पहुंचाया। इसके बाद उसके अभिभावकों को घटना की जानकारी दी गई। स्थानीय लोगों ने उन्हें पुलिस में शिकायत दर्ज कराने की सलाह भी दी, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। बच्चे के अभिभावकों ने बताया, 'हम बहुत गरीब हैं। दूसरे राज्य से यहां आकर मजदूरी करके परिवार का गुजारा करते हैं। हम किसी तरह के विवाद या कोर्ट-कचहरी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहते। हमारे पास इतने पैसे भी नहीं हैं। हम अपने बच्चे का इलाज जैसे-तैसे करवा लेंगे।' स्थानीय लोगों का कहना है कि ट्यूलिप चौक के आसपास कई बच्चे रोज भीख मांगते दिखाई देते हैं। व्यस्त सड़क होने के कारण यहां हर समय दुर्घटना का खतरा बना रहता है। उनका मानना है कि ऐसे बच्चों की सुरक्षा, शिक्षा और पुनर्वास के लिए समय पर ठोस कदम उठाने की जरूरत है, ताकि उन्हें सड़कों पर भीख मांगने के लिए मजबूर न होना पड़े।

बारिश बनी पढ़ाई में बाधा, जलभराव से स्कूल नहीं पहुंच पा रहे बच्चे

बालकनामा रिपोर्टर- प्रीति

दिल्ली के एन-86 समुदाय में लगातार हो रही बारिश के कारण जलभराव की समस्या सामने आई है। इसका सबसे ज्यादा असर बच्चों की पढ़ाई पर पड़ रहा है। गलियों और रास्तों में पानी भर जाने से कई बच्चों के लिए स्कूल पहुंचना मुश्किल हो गया है। बालकनामा रिपोर्टर प्रीति ने समुदाय का दौरा कर बच्चों से बातचीत की। 10 वर्षीय आरव (परिवर्तित नाम), 12 वर्षीय सिमरन (परिवर्तित नाम) और 11 वर्षीय रोहित (परिवर्तित नाम) ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से लगातार बारिश होने के कारण समुदाय की गलियों और पटरी पर पानी भर गया है। कई जगहों पर रास्ते फिसलन भरे हो गए हैं, जिससे स्कूल



आना-जाना जोखिम भरा हो गया है। 10 वर्षीय आरव (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैं रोज स्कूल जाता था, लेकिन अब रास्ते में पानी भर जाने के कारण स्कूल नहीं जा पा रहा हूं। कई बार डर लगता है कि कहीं फिसल न जाऊं।' 12 वर्षीय सिमरन (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'बारिश के समय हमारे घर में भी पानी टपकता है। कई बार मेरी यूनिफॉर्म और किताबें भी भीग जाती हैं।' ऐसे में स्कूल जाना बहुत मुश्किल हो जाता है। 11 वर्षीय रोहित (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'लगातार स्कूल नहीं जाने से पढ़ाई छूट रही है। मुझे अपने शिक्षक और दोस्त भी याद आते हैं। घर पर पढ़ने की कोशिश करता हूं, लेकिन स्कूल जैसी पढ़ाई नहीं हो पाती।' बच्चों ने बताया कि वे घर पर किताबें पढ़ने और गृहकार्य पूरा करने का प्रयास कर रहे हैं, लेकिन नियमित कक्षाओं से दूर रहने के कारण पढ़ाई समझने में कठिनाई हो रही है। उनका कहना है कि बारिश के मौसम में जलभराव की समस्या सिर्फ आने-जाने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनकी शिक्षा भी इससे प्रभावित होती है। समुदाय के लोगों का कहना है कि हर बारिश में गलियों और रास्तों में पानी भर जाता है। इससे बच्चों, बुजुर्गों और काम पर जाने वाले लोगों को भी परेशानी होती है। बच्चों ने उम्मीद जताई कि गलियों और रास्तों से जल्द पानी निकले, ताकि वे सुरक्षित तरीके से स्कूल जा सकें और अपनी पढ़ाई नियमित रूप से जारी रख सकें।

रिकॉर्डिंग स्टूडियो में गुंजा ‘बढ़ते कदम, ये हैं बच्चों का संघ’ गीत

बालकनामा रिपोर्टर - जीत

चेतना संस्था से जुड़े छह बच्चों के लिए दिल्ली के एक पेशेवर रिकॉर्डिंग स्टूडियो में प्रेरणादायक गीत 'बढ़ते कदम, ये हैं बच्चों का संघ' रिकॉर्ड करने का अवसर यादगार अनुभव बन गया। यह उनके लिए केवल एक गीत की रिकॉर्डिंग नहीं थी, बल्कि अपनी प्रतिभा को एक नए मंच पर प्रस्तुत करने और खुद पर विश्वास बढ़ाने का अवसर भी था। गीत की रिकॉर्डिंग में तीन लड़कियों और तीन लड़कों ने भाग लिया। इस गीत के माध्यम से बच्चों के सपनों, आत्मविश्वास, संघर्ष और आगे बढ़ने के संकल्प को स्वर दिया गया। स्टूडियो पहुंचते ही बच्चों के चेहरों पर उत्साह और जिज्ञासा साफ दिखाई दे रही थी। आधुनिक रिकॉर्डिंग उपकरण, माइक्रोफोन और हेडफोन उनके लिए बिल्कुल नया अनुभव था। शुरूआत में कुछ बच्चे थोड़े संकोच में थे, लेकिन जैसे ही रिकॉर्डिंग शुरू हुई, उनका आत्मविश्वास उनकी आवाज में साफ सुनाई देने लगा। इन बच्चों ने चेतना संस्था के संगीत प्रशिक्षण के दौरान कई महीनों तक नियमित अभ्यास किया था। सुर, ताल और गीत के भावों को समझने के लिए उन्होंने लगातार मेहनत की। इसी तैयारी के बाद उन्हें पेशेवर रिकॉर्डिंग स्टूडियो में अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला। रिकॉर्डिंग के दौरान कई हिस्सों को दोबारा रिकॉर्ड करना पड़ा, लेकिन बच्चों ने पूरे धैर्य और उत्साह के साथ हर बार पहले से बेहतर प्रयास किया। स्टूडियो में मौजूद लोगों ने बच्चों की मेहनत, लगन और आत्मविश्वास की सराहना की। 13 वर्षीय आरव (परिवर्तित नाम) ने खुशी जताते हुए कहा, 'स्टूडियो में गाना मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था। शुरूआत में थोड़ा डर लग रहा था, लेकिन रिकॉर्डिंग पूरी होने के बाद बहुत अच्छा लगा। अब मुझे लगता है कि मेहनत करने से ऐसे अवसर मिल सकते हैं।' 12 वर्षीय सिया (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे किसी रिकॉर्डिंग स्टूडियो में गीत गाने का मौका मिलेगा।



इस अनुभव ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया है और अब मेरा मन और अच्छे से गाना सीखने का करता है।' चेतना संस्था बच्चों की रुचि और प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए समय-समय पर संगीत, नृत्य, लेखन और अन्य रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करती है। इस रिकॉर्डिंग ने बच्चों को एक नया अनुभव दिया और

उन्हें अपनी क्षमता पर विश्वास करने का अवसर भी मिला। रिकॉर्डिंग पूरी होने के बाद बच्चों के चेहरों पर खुशी, संतोष और आत्मविश्वास साफ दिखाई दे रहा था। उनके लिए यह अनुभव एक ऐसे पल के रूप में याद रहेगा, जिसने उन्हें अपने सपनों की ओर आगे बढ़ने का हौसला दिया।

अभिभावकों की अनुपस्थिति में सीढ़ियों से गिरा बच्चा, बची जान

बालकनामा रिपोर्टर - करण कुमार

बालकनामा रिपोर्टर करण कुमार ने जब गुरुग्राम के नाथूपुर समुदाय का दौरा किया, तो उन्हें जानकारी मिली कि एक छोटा बच्चा सीढ़ियों से गिरकर घायल हो गया है। घटना की जानकारी लेने के लिए वे बच्चे के घर पहुंचे और परिवार के साथ-साथ आसपास के लोगों से बातचीत की। समुदाय के निवासी ओमप्रकाश ने बताया कि बच्चे के माता-पिता रोज सुबह काम पर चले जाते हैं और देर शाम घर लौटते हैं। इस दौरान बच्चा अपने भाई-बहनों के साथ घर पर रहता है। घटना वाले दिन उसकी बहन घर के काम में व्यस्त थी, जबकि बच्चा अकेले खेल रहा था। खेलते समय अचानक उसका पैर सीढ़ियों पर फिसल गया और वह नीचे गिर पड़ा। गिरने से उसके सिर में चोट



लगी और खून निकलने लगा। घटना के बाद आसपास के लोगों ने बिना देर किए बच्चे को उठाया और नजदीकी डॉक्टर के पास लेकर पहुंचे। वहां उसका प्राथमिक उपचार किया गया और सिर पर पट्टी की गई। समय पर इलाज मिलने से बच्चे की हालत सामान्य हो गई और उसे किसी

हर शनिवार जादू का आकर्षण बच्चों को स्कूल से कर रहा दूर

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: रिहान

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा कर बच्चों की दिनचर्या और उनके सामने आने वाली परिस्थितियों को समझने का प्रयास किया। इस दौरान कली का भट्टा कच्ची बस्ती में बड़ी संख्या में बच्चे एक जगह जमा दिखाई दिए। पास जाकर जानकारी लेने पर पता चला कि एक जादूगर बच्चों को जादू के खेल दिखाने आया था। जादूगर के करतब देखने के लिए बच्चे काफी उत्साहित थे। कुछ बच्चे उसके बिल्कुल पास खड़े होकर जादू को ध्यान से देखने और यह समझने की कोशिश कर रहे थे कि करतब कैसे किए जा रहे हैं, जबकि कई बच्चे आसपास खड़े होकर कार्यक्रम देख रहे थे। बच्चों की भीड़ और उत्साह से साफ दिखाई दे रहा था कि जादू का यह कार्यक्रम उनके लिए खास आकर्षण बना हुआ है। रिपोर्टर ने बच्चों और आसपास मौजूद लोगों से बातचीत की तो पता चला कि जादूगर हर शनिवार बस्ती में जादू का खेल दिखाने आता है। बच्चों को उसके आने की जानकारी पहले से रहती है और वे शनिवार को उसका इंतजार करते हैं। बातचीत के दौरान यह भी



सामने आया कि कुछ बच्चे जादू देखने के लिए शनिवार को विद्यालय जाने के बजाय बस्ती में ही रुक जाते हैं। 12 वर्षीय रिहान (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'इसमें पता रहता है कि शनिवार को जादूगर आएगा, इसलिए हम उसका इंतजार करते हैं और जादू देखने के लिए स्कूल नहीं जाते।' बच्चों के लिए खेल, मनोरंजन और अपनी पसंद की गतिविधियों के लिए समय मिलना जरूरी है, लेकिन किसी मनोरंजक कार्यक्रम के कारण विद्यालय छूटने लगे तो इसका असर उनकी पढ़ाई पर पड़ सकता है। शनिवार को स्कूल जाने के बजाय लगातार बस्ती में रुकना बच्चों की नियमित उपस्थिति

और सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है। कली का भट्टा बस्ती की यह स्थिति यह भी दिखाती है कि बच्चों को स्कूल से जोड़ना केवल दाखिला कराने तक सीमित नहीं है। उनके नियमित विद्यालय आने के लिए परिवार और समुदाय की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। बच्चों को यह समझाने की जरूरत है कि मनोरंजन के लिए समय निकालते हुए भी पढ़ाई और विद्यालय की जिम्मेदारी बनी रहनी चाहिए। परिवार और समुदाय यदि बच्चों की स्कूल उपस्थिति पर ध्यान दें, तो वे जादू जैसे मनोरंजन का आनंद भी ले सकते हैं और अपनी पढ़ाई से भी जुड़े रह सकते हैं।

कूड़े का ढेर हटने से बच्चों और स्थानीय लोगों को मिली बड़ी राहत

रिपोर्टर: अमृत बातूनी रिपोर्टर: किशोर

दिल्ली की एक बस्ती में रहने वाले 10 वर्षीय बालक किशोर (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ समय पहले उनकी बस्ती के पास कूड़े का एक बहुत बड़ा ढेर लगा रहता था। बस्ती के लोग अपने घरों का कचरा, बचा हुआ भोजन और गंदा पानी भी इसी जगह पर फेंक देते थे। इसके अलावा, दूसरी जगहों से आने वाले कुछ



वाहन भी यहाँ कूड़ा डालकर चले जाते थे। धीरे-धीरे यह जगह कूड़े के एक बड़े ढेर में बदल गई थी, जिससे आसपास रहने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। कूड़े के कारण पूरे इलाके में बदबू फैली रहती थी और मच्छर-मक्खियों की संख्या भी बहुत बढ़ गई थी। बच्चे भी इसी जगह के आसपास खेलते थे, जिसके कारण उन्हें बुखार, खाँसी और अन्य बीमारियाँ होने का खतरा बना रहता था। स्थानीय लोगों का कहना था कि गंदगी के कारण आसपास का वातावरण भी दूषित हो रहा था और लोगों को स्वच्छ हवा नहीं मिल पा रही थी। कई लोगों को इस गंदगी और बदबू के कारण रोजाना परेशानी होती थी। किशोर ने बताया कि अब इस जगह की नियमित सफाई होने लगी है। दिल्ली नगर

निगम (एमसीडी) की कूड़ा गाड़ी रोज बस्ती में आती है और घरों से इकट्ठा किया गया कूड़ा अपने साथ ले जाती है। इसके कारण अब पहले की तरह वहाँ कूड़े का बड़ा ढेर नहीं लगता है। पहले जहाँ चारों

तरफ गंदगी दिखाई देती थी, वहीं अब यह इलाका पहले से ज्यादा साफ-सुथरा नजर आता है। सफाई होने से बदबू भी कम हुई है और मच्छरों की संख्या में भी कमी आई है। इससे बच्चों और स्थानीय लोगों को काफी राहत मिली है। बस्ती के लोगों ने बताया कि नियमित रूप से कूड़ा उठने और सफाई होने से आसपास का वातावरण पहले से बेहतर हुआ है और बच्चों के लिए भी एक सुरक्षित माहौल बना है। बच्चों का कहना है कि यदि इसी तरह रोज कूड़ा गाड़ी आती रहे और सभी लोग अपना कूड़ा उसी में डालें, तो बस्ती हमेशा साफ-सुथरी बनी रहेगी। इससे दोबारा कूड़े का बड़ा ढेर भी नहीं लगेगा और बच्चों व स्थानीय लोगों को गंदगी से होने वाली परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

खुली नालियों के बीच खेलते बच्चों पर मंडराता खतरा



रिपोर्टर: अमृत
बातूनी रिपोर्टर: पायल

बालकनामा रिपोर्टर अमृत ने दिल्ली की एक बस्ती का दौरा किया तो वहाँ आसपास कई जगह नालियाँ खुली हुई दिखाई दीं। दौरे के दौरान शाम के समय कई बच्चे इन खुली नालियों के पास खेलते हुए दिखाई दिए। नालियों पर ढक्कन नहीं होने के कारण बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंता बनी हुई है। रिपोर्टर अमृत ने मौके पर मौजूद एक स्थानीय बालक से बातचीत करते हुए पूछा कि ये नालियाँ कब से खुली हैं और क्या इन्हें कभी बंद नहीं किया जाता। इस पर बालक ने बताया कि नालियाँ लंबे समय से इसी तरह खुली पड़ी हैं और बच्चों को इनके आसपास खेलते समय सावधानी रखनी पड़ती है। रिपोर्टर ने आगे पूछा कि जब बच्चे शाम के समय यहाँ खेलते हैं तो क्या कभी डर नहीं लगता कि कोई बच्चा नाली में गिर सकता है। बच्चे ने बताया कि डर तो लगता है, क्योंकि बच्चे खेलते-खेलते नाली के काफी पास चले जाते हैं। अगर कोई बच्चा खेलते समय ध्यान न दे तो उसके नाली में गिरने का खतरा

बना रहता है। वहीं, 13 वर्षीय बालिका राधिका (परिवर्तित नाम) से भी बातचीत की गई। राधिका ने बताया कि बारिश के समय नालियों में पानी भर जाता है और उस समय नाली का खुला हिस्सा ठीक से

दिखाई नहीं देता। उन्होंने कहा कि अगर नालियों को ढक दिया जाए तो बच्चों के लिए यह जगह ज्यादा सुरक्षित हो सकती है और उन्हें खेलते समय भी डर नहीं लगेगा। स्थानीय लोगों का कहना है कि खुली नालियों के कारण बच्चों के साथ-साथ बुजुर्गों और राहगीरों को भी परेशानी होती है। लोगों का कहना है कि शाम के समय जब अंधेरा होने लगता है, तब इन खुली नालियों के पास से निकलना और भी मुश्किल हो जाता है। लोगों ने संबंधित विभाग से मांग की है कि इन नालियों को जल्द ढकवाया जाए और उनकी नियमित सफाई कराई जाए। स्थानीय लोगों का कहना है कि बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए प्रशासन को किसी हादसे का इंतजार नहीं करना चाहिए, बल्कि समय रहते जरूरी कदम उठाने चाहिए।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने उत्साह के साथ मनाया स्वतंत्रता दिवस

बालकनामा रिपोर्टर: दिव्यांशी

झुग्गी में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया। इस अवसर पर बच्चों ने तिरंगा फहराया, राष्ट्रगान गाया और देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किए। कई बच्चों ने देशभक्ति से जुड़े भाषण दिए, कविताएँ सुनाई और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लिया। सीमित संसाधनों के बावजूद बच्चों के चेहरों पर खुशी और देश के प्रति सम्मान की भावना साफ दिखाई दे रही थी। बच्चों ने देशभक्ति के नारे लगाए और भारत माता की जय के नारे

भी लगाए। पूरे कार्यक्रम के दौरान बच्चों में काफी उत्साह देखने को मिला। इस अवसर पर बच्चों को स्वतंत्रता दिवस के महत्व और देश की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान के बारे में बताया गया। बच्चों ने महात्मा गांधी को याद किया और भगत सिंह के बारे में जाना। इसके साथ ही उन्होंने सुभाष चंद्र बोस के योगदान के बारे में जानकारी ली और जवाहरलाल नेहरू के योगदान को भी समझा। बच्चों को देश की आजादी के संघर्ष और स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान के बारे में भी बताया गया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने एकता और भाईचारे के

महत्व को भी समझा। बच्चों में देश के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना देखने को मिली। सभी बच्चे खुशी और उत्साह के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए और उन्होंने मिलकर स्वतंत्रता दिवस का उत्सव मनाया। यह आयोजन बच्चों के लिए खुशी, सीख और उत्साह से भरा रहा। सीमित संसाधनों के बावजूद बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया। कार्यक्रम के अंत तक बच्चों के चेहरों पर खुशी साफ दिखाई दे रही थी और उन्होंने कहा कि इस तरह के कार्यक्रमों से उन्हें देश और उसके इतिहास के बारे में नई बातें जानने का अवसर मिलता है।

एक तरफ बारिश ने बढ़ाई मुश्किलें, तो दूसरी तरफ बच्चों के लिए लौई खुशियाँ

बातूनी रिपोर्टर: अभय कुमार

गुरुग्राम में हुई बारिश ने कई जगहों पर लोगों की मुश्किलें बढ़ा दीं। सड़कों पर पानी भर गया, जिससे आने-जाने में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। लेकिन इसी बारिश के बीच नाथपुर बस्ती के सड़क एवं कामकाजी बच्चों के लिए मौसम खुशी का एक मौका लेकर आया।

24 अगस्त 2026 को बालकनामा के बातूनी रिपोर्टर अभय कुमार ने गुरुग्राम की नाथपुर बस्ती का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने देखा कि कुछ बच्चे बारिश में नहा रहे थे और खुले आसमान के नीचे खूब मस्ती कर रहे थे। बच्चों के चेहरों पर बारिश की

खुशी साफ दिखाई दे रही थी। अभय ने बच्चों को समझाया कि बारिश में ज्यादा देर तक भीगने से वे बीमार पड़ सकते हैं।

इस पर बच्चों ने बताया कि पिछले कई दिनों से बहुत गर्मी पड़ रही थी। स्कूल से आने-जाने और रोजमर्रा के कामों के दौरान उन्हें काफी परेशानी हो रही थी। आज बारिश होने से उन्हें गर्मी से राहत मिली है।

बच्चों ने बताया कि बारिश के कारण कई जगह पानी भर गया है, जिससे आने-जाने में परेशानी हो रही है। इसके बावजूद वे बारिश का आनंद लेना नहीं छोड़ना चाहते। बच्चों ने बारिश की बूंदों में खेलते हुए, नहाते हुए और हँसते हुए अपने बचपन के कुछ खूबसूरत पल बिताए।

इन बच्चों के लिए बारिश सिर्फ मौसम का बदलना नहीं थी, बल्कि रोजमर्रा की जिम्मेदारियों और परेशानियों के बीच कुछ पल खुलकर खुश होने का मौका भी बन गई। कुछ देर के लिए बच्चों ने अपनी जिम्मेदारियों और परेशानियों को भुलाकर बारिश में खूब मस्ती की। जहाँ बारिश ने कई लोगों के लिए परेशानी खड़ी की, वहीं इन बच्चों ने उसी बारिश में अपनी खुशी ढूँढ ली।

यह नजारा बताता है कि बचपन परिस्थितियों का मोहताज नहीं होता, उसे बस खुशी के कुछ पल चाहिए। साथ ही, बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखना भी जरूरी है। बारिश और जलभराव वाले स्थानों पर बच्चों को सुरक्षित रखने के साथ उन्हें खेलने और स्वस्थ रहने का अवसर देना भी उनके अधिकारों का हिस्सा है।

एन-86 बस्ती का सार्वजनिक शौचालय बदहाल, टूटे गेट और खराब नलों से बड़ी परेशानी

रिपोर्टर: अमृत

बालकनामा रिपोर्टर अमृत ने जब दिल्ली के एन-86 बस्ती का दौरा किया तो वहाँ के सार्वजनिक शौचालय की हालत काफी खराब दिखाई दी। शौचालय का गेट टूटा हुआ था और अंदर लगे कई नल भी खराब थे। शौचालय के कई हिस्सों में टूट-फूट होने के कारण स्थानीय लोगों को इसका इस्तेमाल करने में परेशानी हो रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शौचालय की यह समस्या काफी समय से बनी हुई है और अभी तक इसकी मरम्मत नहीं कराई गई है। 14 वर्षीय बालक राम (परिवर्तित नाम) से जब इस समस्या को लेकर बात की गई तो

बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि यह समस्या बहुत दिनों से बनी हुई है। राम ने बताया कि शौचालय का गेट और कई नल टूटे हुए हैं, जिससे लोगों को काफी परेशानी होती है। उनके मुताबिक, लंबे समय से शौचालय की व्यवस्था खराब होने के बावजूद अभी तक इसकी मरम्मत नहीं कराई गई है। वहीं, बस्ती की एक 13 वर्षीय बालिका काजल (परिवर्तित नाम) ने बताया कि सार्वजनिक शौचालय की खराब व्यवस्था के कारण बच्चों को भी परेशानी होती है। उन्होंने बताया कि गेट और नल खराब होने के साथ-साथ शौचालय की दूसरी सुविधाएँ भी ठीक नहीं हैं। काजल का कहना है कि शौचालय की व्यवस्था जल्द ठीक होनी



चाहिए, ताकि बच्चों और अन्य लोगों को परेशानी का सामना न करना पड़े। बस्ती में रहने वाले कई परिवार इस सार्वजनिक शौचालय पर निर्भर हैं। ऐसे में गेट, नल और दूसरी जरूरी सुविधाओं का खराब

होना उनके लिए परेशानी का कारण बन रहा है। स्थानीय लोगों के अनुसार, शौचालय की खराब व्यवस्था का असर रोज इसका इस्तेमाल करने वाले लोगों पर पड़ रहा है और उन्हें कई तरह की

दिवक्तों का सामना करना पड़ता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि शौचालय की नियमित सफाई और देखभाल के साथ-साथ टूटे हुए सामान की मरम्मत भी जरूरी है। उनका कहना है कि अगर शौचालय की सुविधाओं को ठीक कर दिया जाए और समय-समय पर इसकी देखभाल की जाए, तो लोगों को काफी राहत मिल सकती है। स्थानीय लोगों ने संबंधित विभाग से मांग की है कि ठ-86 बस्ती के सार्वजनिक शौचालय का जल्द निरीक्षण कराया जाए। साथ ही टूटे गेट, खराब नलों और शौचालय की अन्य समस्याओं को जल्द ठीक कराया जाए, ताकि बस्ती के लोगों और बच्चों को बेहतर और सुरक्षित सुविधाएँ मिल सकें।

स्वप्ना सम्मेलन-2026 में अनाथ बच्चों के सपनों और भविष्य पर हुई विस्तृत चर्चा

रिपोर्टर: अमृत

दिल्ली के गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय में 21 अगस्त 2026 को बच्चों के सपनों, अधिकारों और बेहतर भविष्य को लेकर ‘स्वप्ना सम्मेलन-2026’ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बच्चों से जुड़े अलग-अलग मुद्दों पर चर्चा की गई। खास तौर पर उन बच्चों के जीवन और भविष्य को लेकर बात हुई, जिनके माता-पिता उनके साथ नहीं हैं। कार्यक्रम में पहुंचने पर सभागार में बड़ी संख्या में लोग मौजूद दिखाई दिए। मंच को फूलों और पौधों से सजाया गया था। सामने एक बड़ी स्क्रीन लगाई गई थी, जिस पर सम्मेलन से जुड़ी जानकारी दिखाई जा रही थी। मंच पर अतिथियों के बैठने की व्यवस्था भी की गई थी। कार्यक्रम के दौरान वहाँ मौजूद वक्ताओं ने अनाथ बच्चों की शिक्षा, सुरक्षा, देखभाल और भविष्य को लेकर अपनी बातें रखीं। चर्चा के दौरान यह बात सामने आई कि ऐसे बच्चों को समाज से अलग समझने के बजाय उन्हें भी दूसरे बच्चों की तरह आगे बढ़ने के समान अवसर मिलने चाहिए। वक्ताओं ने बच्चों के सपनों को लेकर भी बात की। किसी बच्चे का सपना डॉक्टर, शिक्षक, कलाकार या किसी दूसरे क्षेत्र में जाने का हो सकता है। लेकिन कई बार परिवार का सहारा न होने के कारण



बच्चों को अपने भविष्य को लेकर कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे बच्चों को सही मार्गदर्शन और सहयोग मिलना जरूरी है। कार्यक्रम में बच्चों के अधिकार और सम्मान को लेकर भी चर्चा हुई। वक्ताओं ने कहा कि बच्चों को सिर्फ भोजन और रहने की जगह देना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, सुरक्षित वातावरण और अपनी प्रतिभा को विकसित करने का अवसर भी मिलना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी देखने को मिलीं। बच्चों ने मंच पर अपनी कला और प्रतिभा का प्रदर्शन किया। उनकी प्रस्तुतियों को देखकर यह महसूस हुआ कि बच्चों में प्रतिभा और आत्मविश्वास

की कमी नहीं है। जरूरत सिर्फ उन्हें सही मंच और आगे बढ़ने के अवसर देने की है। सम्मेलन में यह संदेश देने की कोशिश की गई कि अनाथ बच्चों के सपनों को भी उतनी ही अहमियत मिलनी चाहिए, जितनी किसी दूसरे बच्चे के सपनों को मिलती है। समाज, परिवार जैसी भूमिका निभाने वाली संस्थाओं और सरकार को मिलकर ऐसे बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने की दिशा में काम करने की जरूरत है। कार्यक्रम से यह बात सामने आई कि हर बच्चे का सपना महत्वपूर्ण है। चाहे बच्चा अपने माता-पिता के साथ रह रहा हो या किसी संस्था के सहारे, उसे पढ़ने, आगे बढ़ने और अपने सपने पूरे करने का अधिकार और अवसर मिलना चाहिए।

खेल-खेल में बच्चों ने सीखा सेहत और अनुशासन का पाठ



बालकनामा रिपोर्टर:जीत

गुरुग्राम के चक्करपुर समुदाय स्थित शिक्षा केंद्र में बच्चों के लिए पढ़ाई के साथ-साथ शारीरिक गतिविधियों को भी सीखने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया जा रहा है।

इसी क्रम में बच्चों ने विभिन्न शारीरिक गतिविधियों में उत्साह के साथ भाग लिया और खेल-खेल में स्वास्थ्य, अनुशासन, एकाग्रता और टीम भावना का महत्व समझा। गतिविधि के दौरान बच्चों ने हाथ-पैरों की अलग-अलग एक्सरसाइज और

स्ट्रेचिंग का अभ्यास किया। बच्चों ने व्यायाम के निदेशों को ध्यान से सुना और उसी के अनुसार गतिविधियाँ करने की कोशिश की।

इस दौरान बच्चों में एक-दूसरे को देखकर सीखने और साथ मिलकर गतिविधि पूरी करने की भावना भी देखने को मिली। शारीरिक गतिविधियों के जरिए बच्चों को यह समझाने का प्रयास किया गया कि स्वस्थ रहने के लिए केवल अच्छा खाना ही नहीं, बल्कि रोजाना शरीर को सक्रिय रखना भी जरूरी है। नियमित खेल और व्यायाम बच्चों को चुस्त-दुरुस्त रखने के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास और एकाग्रता को बढ़ाने में भी मदद करते हैं।

गतिविधि के दौरान बच्चों ने अनुशासन का भी अभ्यास किया। निदेशों का पालन करना, अपनी बारी का इंतजार करना और समूह के साथ मिलकर काम करना बच्चों के लिए महत्वपूर्ण जीवन कौशल हैं। खेल के माध्यम से ये बातें बच्चों को आसानी से समझ आती हैं और सीखने का अनुभव भी मजेदार बन जाता है। चक्करपुर के शिक्षा केंद्र में ऐसी गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को यह संदेश दिया जा रहा है कि शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं है। स्वस्थ शरीर, सकारात्मक सोच, अनुशासन और सहयोग की भावना भी बच्चों के सर्वांगीण विकास का जरूरी हिस्सा हैं। बच्चों की सक्रिय भागीदारी ने यह दिखाया कि जब सीखने के साथ खेल और मनोरंजन जुड़ता है, तो बच्चे ज्यादा उत्साह से सीखते हैं और नई चीजों को अपनाने के लिए भी प्रेरित होते हैं। बच्चों का कहना है कि इस तरह की गतिविधियों से उन्हें पढ़ाई के साथ-साथ नई चीजें सीखने और दोस्तों के साथ मिलकर समय बिताने का भी मौका मिलता है।

मच्छरों के बढ़ते आतंक से बढ़ा बच्चों के बीमार होने का खतरा

रिपोर्टर: अमृत

बरसात के मौसम के साथ ही मच्छरों का आतंक भी तेज हो गया है। इसका सबसे ज्यादा असर बच्चों की सेहत पर देखने को मिल रहा है। मच्छरों के बढ़ने से डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है, जिससे बच्चे तेजी से बीमार पड़ रहे हैं। लॉरेंस रोड की बस्ती में रहने वाले 15 वर्षीय बालक ऋषि (परिवर्तित नाम) ने बताया कि हाल ही में हुई बारिश के कारण उनके घर के सामने वाली गली में बहुत अधिक पानी जमा हो गया है। जब रिपोर्टर ने पूछा कि यह पानी साफ क्यों नहीं होता, तो ऋषि ने बताया कि यहाँ अक्सर पानी जमा रहता है और इसकी सफाई भी नहीं होती। इसी जमा पानी की वजह से मच्छरों की संख्या बढ़ गई है, जिससे डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। इसी बस्ती में रहने वाले एक 7 वर्षीय बालक सोनू (परिवर्तित नाम) को तेज बुखार और खाँसी हो गई है। बीमारी के कारण वह बच्चा न तो ठीक से खेल पा रहा है



और न ही बाहर घूम पा रहा है, क्योंकि वह बेहद कमजोर हो गया है। परिजनों के अनुसार, लगातार बुखार रहने से बच्चे की पढ़ाई और रोजमर्रा की गतिविधियाँ भी प्रभावित हो रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि जब भी बारिश होती है, इलाके में बहुत अधिक मात्रा में पानी

जमा हो जाता है। जब रिपोर्टर ने पूछा कि इस पानी को साफ करवाने के लिए कोई शिकायत क्यों नहीं करता, तो स्थानीय लोगों ने बताया कि सफाई के लिए किसी भी विभाग में शिकायत नहीं की जाती। इसी कारण जमा पानी लंबे समय तक वहीं पड़ा रहता है और डेंगू व मलेरिया जैसी

बीमारियों को बढ़ावा देता है, जिससे बच्चे गंभीर रूप से बीमार हो सकते हैं। इसके अलावा, इलाके की कई नालियाँ खुली हुई हैं, जिनमें बच्चों के गिरने का खतरा बना रहता है और गड्ढों में फँसने की भी आशंका रहती है। जब रिपोर्टर ने पूछा कि ये नालियाँ कभी साफ या बंद क्यों नहीं की जातीं, तो स्थानीय लोगों ने बताया कि इन नालियों को बंद करने की कोई व्यवस्था नहीं की गई है। इलाके की महिलाओं का कहना है कि छोटे-छोटे बच्चे खुले नालों और गड्ढों के पास खेलते हैं, जिससे न केवल बीमारियों का डर बना रहता है, बल्कि किसी बड़े हादसे की संभावना भी बनी रहती है। अभिभावकों का कहना है कि बच्चे बार-बार बीमार पड़ रहे हैं, इलाज पर खर्च बढ़ गया है और उनकी पढ़ाई भी लगातार प्रभावित हो रही है। बच्चों और स्थानीय लोगों की मांग है कि जल विभाग और संबंधित विभाग इलाके में जमा पानी को जल्द हटवाए और नालियों को साफ कराकर सुरक्षित तरीके से बंद करवाए, ताकि बीमारियों पर रोक लग सके और बच्चे सुरक्षित रह सकें।

राष्ट्रीय पुलिस स्मारक में बच्चों ने जाना वीर पुलिसकर्मियों के बलिदान का इतिहास

बालकनामा रिपोर्टर - आसिफ

दिल्ली में चेतना संस्था ने स्ट्रीट टू स्कूल परियोजना के अंतर्गत पश्चिमी दिल्ली के कमला नेहरू कैंप और जखीरा समुदाय के 49 बच्चों (22 लड़के और 27 लड़कियां) को राष्ट्रीय पुलिस स्मारक एवं संग्रहालय के शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाया गया। इस भ्रमण का उद्देश्य बच्चों को पुलिस विभाग की भूमिका, उनकी जिम्मेदारियों, साहस और देश के लिए दिए गए सर्वोच्च बलिदानों से परिचित कराना था। भ्रमण की शुरूआत में एस. पी. मुखर्जी ने बच्चों को राष्ट्रीय पुलिस स्मारक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह स्मारक देश की सुरक्षा करते हुए शहीद हुए पुलिसकर्मियों की स्मृति में बनाया गया है। इसके बाद बच्चों ने वॉल ऑफ वैलर और अमर ज्योति का अवलोकन किया। उन्हें बताया गया कि यह स्मारक प्रकृति के पांच तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु



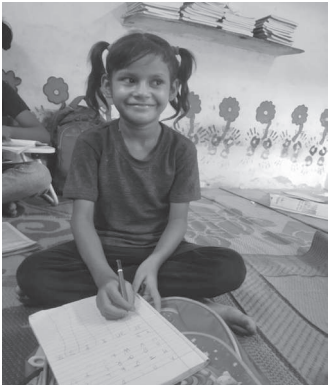
और आकाश की अवधारणा पर आधारित है तथा अमर ज्योति शहीद पुलिसकर्मियों के साहस और बलिदान का प्रतीक है। बच्चों ने स्मारक पर अंकित लगभग 35,000 शहीद पुलिसकर्मियों के नाम

भी देखे। इन नामों को पढ़कर बच्चों ने देश की सुरक्षा में पुलिसकर्मियों के योगदान को समझा। कई बच्चों ने कहा कि उन्हें पहली बार यह जानने का अवसर मिला कि पुलिसकर्मी नागरिकों की सुरक्षा के

लिए किस तरह अपनी जान की परवाह किए बिना काम करते हैं। इसके बाद बच्चों ने राष्ट्रीय पुलिस संग्रहालय का भ्रमण किया। यहां उन्होंने हेड कांस्टेबल से लेकर पुलिस महानिदेशक (डीजी) तक के विभिन्न पदों और उनकी जिम्मेदारियों के बारे में जानकारी प्राप्त की। संग्रहालय में प्रदर्शित विभिन्न राज्यों की पुलिस वर्दियां, पुराने और आधुनिक संचार उपकरण, ऐतिहासिक दस्तावेज, वीरता पदक, पुलिस कार्यों से जुड़ी तस्वीरें, हथियार और अन्य उपकरण बच्चों के आकर्षण का केंद्र रहे। भ्रमण के दौरान बच्चों ने पुलिसकर्मियों के साहस और बलिदान पर आधारित सात मिनट की एक फिल्म भी देखी। डिजिटल स्क्रीन के माध्यम से उन्होंने विभिन्न राज्यों के शहीद पुलिसकर्मियों की वीरगाथाओं और उनके योगदान के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के अंत में बच्चों से उनकी सीख जानने के लिए पोस्ट असेसमेंट कराया गया। इसके बाद सभी बच्चों ने

भोजन किया और उन्हें सुरक्षित उनके समुदायों तक पहुंचाया गया। बालकनामा रिपोर्टर से बातचीत में 15 वर्षीय आदिल (परिवर्तित नाम) ने कहा, 'मुझे पांच तत्वों पर बना स्मारक और उसके सामने रखी उल्टी बंदूक और टोपी सबसे ज्यादा पसंद आई। यहां आकर मुझे पता चला कि शहीद पुलिसकर्मियों को किस तरह सम्मान दिया जाता है।' 14 वर्षीय अन्नू (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'संग्रहालय में पुलिस की वर्दियां, असली उपकरण और दूसरी चीजें देखकर बहुत अच्छा लगा।' इस भ्रमण से मुझे पुलिस के काम और उनकी जिम्मेदारियों के बारे में बहुत कुछ नया जानने को मिला।' इस शैक्षणिक भ्रमण ने बच्चों को पुलिस विभाग के इतिहास, कार्यप्रणाली और जिम्मेदारियों के बारे में नई जानकारी दी। बच्चों ने कहा कि इस यात्रा के बाद उनके मन में देश की सेवा करने वाले पुलिसकर्मियों के प्रति सम्मान और बढ़ा है।

परीक्षा की चुनौती के आगे नहीं रुका पढ़ाई का सफर



बालकनामा रिपोर्टर: जहाना

पश्चिमी दिल्ली की शकूर बस्ती में रहने वाली 14 वर्षीय नाजिया (परिवर्तित नाम) रोज स्कूल जाती थी और अपनी पढ़ाई जारी रखने की कोशिश करती थी। परिवार की आर्थिक स्थिति और घर की जिम्मेदारियों के बीच पढ़ाई के लिए समय निकालना उसके लिए हमेशा आसान नहीं था। इसके बावजूद वह स्कूल जाने और अपनी पढ़ाई पूरी करने को लेकर गंभीर थी। कक्षा में पढ़ाई के दौरान गणित उसके लिए एक मुश्किल विषय बन गया। वार्षिक परीक्षा में उसे गणित की पूरक परीक्षा देनी पड़ी। परीक्षा का परिणाम उसके लिए निराशाजनक था। उसे लगा कि उसकी मेहनत के बावजूद वह इस विषय को ठीक से समझ नहीं पा रही है। इस दौरान उसका आत्मविश्वास भी प्रभावित हुआ, लेकिन उसने पढ़ाई से पीछे हटने के बजाय दोबारा तैयारी करने का फैसला किया। नाजिया ने गणित के उन हिस्सों पर ज्यादा ध्यान देना शुरू किया, जिनमें उसे परेशानी होती थी। वह नियमित अभ्यास करने लगी और समझ में न आने वाले सवालों को शिक्षकों की मदद से दोबारा समझती रही। धीरे धीरे उसे सवाल हल करने में पहले से अधिक सहजता महसूस होने लगी। पूरक परीक्षा की तैयारी के दौरान उसने अपनी गलतियों

को दोहराने के बजाय उन्हें समझने और सुधारने पर ध्यान दिया। दोबारा परीक्षा देने के बाद नाजिया सफल रही और उसने कक्षा 9 में प्रवेश प्राप्त कर लिया। उसके लिए यह सिर्फ अगली कक्षा में जाने का मौका नहीं था, बल्कि उस निराशा से बाहर निकलने का अनुभव भी था जो उसे पहली परीक्षा के बाद हुई थी। सफलता के बाद उसके भीतर आगे बढ़ने का भरोसा बढ़ा है। अब वह अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती है और भविष्य में अपने लिए बेहतर अवसर बनाना चाहती है। नाजिया की कहानी यह दिखाती है कि पढ़ाई के दौरान आने वाली एक मुश्किल बच्चे की पूरी क्षमता तय नहीं करती। उसके लिए सही समय पर दोबारा प्रयास करने का अवसर और मार्गदर्शन महत्वपूर्ण रहा। गणित में आई परेशानी के बाद उसने रास्ता छोड़ने के बजाय अपनी तैयारी पर काम किया और आखिरकार कक्षा 9 तक पहुँचने में सफल रही।

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: अनिता

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया। इस दौरान आगरा रोड स्थित बस्ती के पास निर्माण स्थल पर कुछ बच्चे ईंटें उठाते हुए दिखाई दिए। बच्चों से बातचीत में सामने आया कि वे मजदूरी के पैसे के लिए काम नहीं कर रहे थे, बल्कि नहाने के लिए पानी की उम्मीद में रोजाना 2 से 3 घंटे तक निर्माण स्थल पर ईंटें उठाते हैं। इसके बदले उन्हें निर्माण स्थल पर रखे टैंक के पानी से नहाने की अनुमति मिलती है। रोजाना 9 से 13 वर्ष की आयु के 4 से 5 बच्चे नंगे पैर और सिर पर कपड़ा बांधकर ईंटें उठाते हैं और

एक बच्चा-एक पौधा, बच्चों ने स्कूल में मनाया 'हरियालो राजस्थान' अभियान

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: पलक

सावन के सुहाने महीने में हरियाली और पर्यावरण संरक्षण का संदेश लेकर सरकारी विद्यालयों में 'हरियालो राजस्थान' अभियान के तहत पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार सभी विद्यालयों में बच्चों को पौधारोपण के साथ-साथ पेड़-पौधों के महत्व और उनकी देखभाल के प्रति जागरूक किया गया। इसी क्रम में राजकीय प्राथमिक विद्यालय खार की ढाणी जयपुर में भी बच्चों ने उत्साह के साथ पौधारोपण किया। विद्यालय की शिक्षिका निर्मला जी के मार्गदर्शन में बच्चों ने नीम, पीपल, करंज सहित विभिन्न पौधे लगाए। पौधे लगाने के बाद बच्चों ने उन्हें नियमित रूप से पानी देने, उनकी सुरक्षा करने और बढ़ा होने तक उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। बच्चों को बताया गया कि पेड़-पौधे हमारे जीवन के लिए बेहद



जरूरी हैं। पेड़ हमें स्वच्छ हवा, छाया और बेहतर वातावरण देने के साथ-साथ प्रकृति का संतुलन बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कार्यक्रम में बच्चों ने सीखा कि केवल पौधा लगाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसकी नियमित देखभाल करना भी हमारी जिम्मेदारी है। बच्चों ने 'एक बच्चा-एक पौधा' का संदेश देते हुए अपने घर और आसपास भी पौधे लगाने तथा उनकी देखभाल करने की अपील की। 11 वर्षीय बालिका पलक (परिवर्तित

नाम) ने बताया की 'स्कूल में पौधारोपण देखकर मुझे भी प्रेरणा मिली। मैंने अपनी बस्ती में घर के आगे एक पौधा लगाया है। मैं उसे हमेशा पानी दूंगी और उसका ध्यान रखूंगी।' बालिका की पहल से यह संदेश मिलता है कि बच्चों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ने पर वे अपने परिवार और बस्ती में भी सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। विद्यालय के इस प्रयास ने बच्चों में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और संवेदनशीलता की भावना को मजबूत किया।

पानी के लिए ईंट उठा रहे मासूम

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी
बातूनी रिपोर्टर: अनिता

उन्हें एक जगह से दूसरी जगह रखते हैं। 12 वर्षीय अनीता (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'घर पर पानी नहीं आता। गर्मी बहुत लगती है, इसलिए यहां काम कर लेते हैं। बाद में टैंक के पानी से नहा लेते हैं। हमें पैसे नहीं मिलते, सिर्फ पानी मिलता है।' बच्चों ने बताया कि वे रोज समूह बनाकर निर्माण स्थल पर आते हैं और कई बार इस काम को खेल की तरह करते हैं। उनके लिए ईंट उठाने का यह सिलसिला पानी की जरूरत पूरी करने का एक तरीका बन गया है। कुछ बच्चों के अभिभावकों को भी उनके इस तरह निर्माण स्थल पर जाने की पूरी जानकारी नहीं है। बस्ती में लंबे समय से पीने और नहाने के पानी की समस्या बनी हुई है। सरकारी जलापूर्ति नियमित नहीं होने



के कारण परिवारों को पानी जुटाने में परेशानी होती है। निजी टैंकर से पानी खरीदना भी अधिकांश परिवारों के लिए महंगा पड़ता है। ऐसे में नहाने के लिए पानी पाने की चाह बच्चों को निर्माण स्थल तक ले जा रही है। नंगे पैर ईंट उठाना और निर्माण स्थल पर घंटों रहना बच्चों के लिए शारीरिक चोट और अन्य सुरक्षा जोखिम पैदा कर सकता है। पानी जैसी बुनियादी जरूरत के लिए बच्चों का निर्माण स्थल पर काम करना इस समस्या की गंभीरता को सामने लाता है। बस्ती में नियमित और सुरक्षित जलापूर्ति की व्यवस्था जरूरी है, ताकि बच्चों को पानी के लिए मजदूरी जैसी स्थिति का सामना न करना पड़े और वे अपना समय पढ़ाई, खेल और सुरक्षित बचपन में लगा सकें।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन और Mcarbon Tech Innovation Pvt. Ltd. का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org